



Qasam Ke Baare Mein Madani Phool (Gujarati)

# કસમ કે બારે મેં મ-દની ફૂલ



શૈબે તરીકત, અમીરે અહલે સુલ્તત, બાનિચે દા'વતે ઇસ્લામી, હઝરત અલ્લામા મૌલાના અબૂ ઝિલાલ

મુહમ્મદ ઇબ્રાહિમ અત્તાર કાદિરી ૨-ઝવી

مكتبة الرينة  
(ممبئی)

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَّا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

### કિતાબ પઢને કી દુઆ

અઝ : શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઈસ્લામી, હઝરત અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ  
દીની કિતાબ યા ઈસ્લામી સબક પઢને સે પહલે જૈલ મેં દી હુઈ દુઆ પઢ લીજિયે إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ જો કુછ પઢેંગે યાદ રહેગા. દુઆ યેહ હે :

اللَّهُمَّ افْتَحْ عَلَيْنَا حِكْمَتَكَ وَأَنْشُرْ  
عَلَيْنَا رَحْمَتَكَ يَا ذَا الْجَلَالِ وَالْإِكْرَامِ

તરજમા : ઐ અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ ! હમ પર ઈલ્મો હિકમત કે દરવાઝે ખોલ દે ઔર હમ પર અપની રહમત નાજિલ ફરમા ! ઐ અ-ઝમત ઔર બુઝુર્ગી વાલે । (المستطرف ج ١ ص ٤٠٤ دار الفكر بيروت)

નોટ : અવ્વલ આખિર એક એક બાર દુરૂદ શરીફ પઢ લીજિયે.

તાલિબે ગમે મદીના

વ બક્રીઅ

વ મઝિરત

13 શબ્વાલુલ મુકર્રમ 1428 હિ.



## કસમ કે બારે મેં મ-દની ફૂલ

યેહ રિસાલા ( કસમ કે બારે મેં મ-દની ફૂલ )

શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, બાનિયે દા'વતે ઈસ્લામી હઝરત અલ્લામા મૌલાના અબૂ બિલાલ મુહમ્મદ ઈલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ર-ઝવી ઝિયાઈ دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ ને ઉર્દૂ ઝબાન મેં તહરીર ફરમાયા હૈ.

મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી) ને ઈસ રિસાલે કો ગુજરાતી રસ્મુલ ખત મેં તરતીબ દે કર પેશ કિયા હૈ ઔર મક-ત-બતુલ મદીના સે શાએઅ કરવાયા હૈ. ઈસ મેં અગર કિસી જગહ કમી બેશી પાએ તો મજલિસે તરાજિમ કો (બ ઝરીઅએ મકતૂબ, ઈ-મેઈલ યા SMS) મુત્તલઅ ફરમા કર સવાબ કમાઈયે.

રાબિતા : મજલિસે તરાજિમ (દા'વતે ઈસ્લામી)

## મક-ત-બતુલ મદીના

સિલેક્ટેડ હાઉસ, અલિફ કી મસ્જિદ કે સામને, તીન દરવાઝા,

અહમદઆબાદ-1, ગુજરાત, ઈન્ડિયા

MO. 9374031409 • E-mail : translationmaktabhind@dawateislami.net

الْحَمْدُ لِلَّهِ رَبِّ الْعَالَمِينَ وَالصَّلَاةُ وَالسَّلَامُ عَلَى سَيِّدِ الْمُرْسَلِينَ  
أَمَا بَعْدُ فَأَعُوذُ بِاللَّهِ مِنَ الشَّيْطَانِ الرَّجِيمِ بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

## કસમ કે બારે મેં મ-દની ફૂલ

શૈતાન લાખ સુસ્તી દિલાએ મગર આપ યેહ રિસાલા (43 સફહાત)  
| મુકમ્મલ પઠ લીજિયે إِنَّ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ આપ કો મુફીદ તરીન મા'લૂમાત |  
| મિલેંગી

### ફિરિશ્તે આમીન કહતે હૈં

હઝરતે સય્યિદુના અબૂ હુરૈરા رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ سے મરવી હૈ કે સરકારે મદીનએ મુનવ્વરહ, સરદારે મકકએ મુકર્મ મા عَزَّوَجَلَّ اَللّٰهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કે કુછ સચ્ચાહ (યા'ની સૈર કરને વાલે) ફિરિશ્તે હૈં, જબ વોહ મહાફિલે ઝિક કે પાસ સે ગુઝરતે હૈં તો એક દૂસરે સે કહતે હૈં : (યહાં) બૈઠો. જબ ઝાકિરીન (યા'ની ઝિક કરને વાલે) દુઆ માંગતે હૈં તો ફિરિશ્તે ઉન કી દુઆ પર આમીન (યા'ની “એસા હી હો”) કહતે હૈં. જબ વોહ નબી પર દુરુદ ભેજતે હૈં તો વોહ ફિરિશ્તે ભી ઉન કે સાથ મિલ કર દુરુદ ભેજતે હૈં હત્તા કે વોહ મુન્તશિર (યા'ની ઇધર ઉધર) હો જાતે હૈં, ફિર ફિરિશ્તે એક દૂસરે કો કહતે હૈં કે ઈન ખુશ નસીબોં કે લિયે ખુશ ખબરી હૈ કે વોહ મફિરત કે સાથ વાપસ જા રહે હૈં. (جَمْعُ الْجَوَامِعِ لِلشُّبُطِيِّ ج ٣ ص ١٢٥ حديث ٧٧٥٠)

صَلُّوْا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

★ ..... શૈખે તરીકત, અમીરે અહલે સુન્નત, હઝરતે અલ્લામા મૌલાના મુહમ્મદ ઇલ્યાસ અત્તાર કાદિરી ૨-ઝવી ઝિયાઈ دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَهُ કી તસ્નીફ “નેકી કી દા'વત” (હિસ્સએ અવ્વલ) સફહા 161 પર “કસમ કે બારે મેં મ-દની ફૂલ” મૌજૂદ હૈં, ઈફાદિયત કે પેશે નઝર રિસાલે કી સૂરત મેં ભી શાએઅ કિયે જા રહે હૈં. મજલિસે મક-ત-બતુલ મદીના

करमाने मुस्तफ़। عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर अक बार दुरेदे पाक पढा अद्लाह उस पर दस रकमतें भेजता है. (मुस्ल.)

मीठे मीठे इस्लामी भाईयो ! आज कल कसीर लोगों का बात बात पर कसमें पाने की तरफ़ रुजहान देखा जा रहा है, बारहा जूटी कसम ली जा ली जाती है, न तौबा का शुजिर न कफ़ारा देने की कोई शुदबुद, लिहाजा उम्मत की भैर प्वाही का सवाब कमाने की हिर्स के सभब मतौरे नेकी की दा'वत कदरे तफ़सील के साथ कसम और इस के कफ़ारे के बारे में म-दनी कूल पेश करता हूँ, कबूल इरमाईये. इस का अज इब्तिदा ता इन्तिहा मुता-लआ या भा'ज इस्लामी भाईयों का मिल बैठ कर दर्स देना सिर्फ़ मुफ़ीद ही नहीं, **مُحَمَّدٌ صَلَّى اللَّهُ عَلَيْهِ وَسَلَّمَ** मुफ़ीद तरीन साबित होगा.

### कसम की ता'रीफ़

कसम को अ-रबी जबान में “यमीन” कहते हैं जिस का मतलब है : “दाहिनी (या'नी सीधी) जानिब”, यूँके अहले अरब उमूमन कसम पाते या कसम लेते वक्त अक दूसरे से दाहिना (या'नी सीधा) हाथ मिलाते थे इस लिये कसम को “यमीन” कहने लगे, या फिर यमीन “युम्न” से बना है जिस के मा'ना हैं “अ-र-कत व कुव्वत”, यूँके कसम में अद्लाह तआला का भा अ-र-कत नाम ली लेते हैं और इस से अपने कलाम को कुव्वत देते हैं इस लिये इसे यमीन कहते हैं या'नी अ-र-कत व कुव्वत वाली गुफ़्त-गू. (मुवप्पस अज भिरआतुल मनाज्जिह, जि. 5, स. 94) शर-ई अे'तिबार से कसम उस अकद (या'नी अहदो पैमां) को कहते हैं जिस के जरीअे कसम पाने वाला किसी काम के करने या न करने का पुप्ता (पक्का) इरादा करता है. (مُؤَخَّرَاتُ ٥ ص ١٨٨) म-सलन किसी ने यूँ कहा : “अद्लाह **عَزَّ وَجَلَّ** की कसम ! मैं कल तुम्हारा सारा कर्ज अदा कर दूंगा” तो येह कसम है.

करमाने मुस्तक़ी: صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जो शपथ मुझ पर दुइद पाक पठना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (بخاری)

## कसम की तीन अकसाम

कसम तीन तरह की होती है : (1) लग्व (2) गमूस (3) मुन्अकिदा.

﴿1﴾ लग्व येह है के किसी गुजरे हुअे या मौजूदा अम्र (या'नी मुआ-मले) पर अपने जयाल में (या'नी गलत इहमी की वजह से) सहीह ज्ञान कर कसम जाअे और दर हकीकत वोह बात उस के जिलाइ (या'नी उलट) हो, म-सलन किसी ने कसम जाई: “अद्लाह عَزَّوَجَلَّ की कसम ! जैद घर पर नहीं है” और ईस की मा'लूमात में येही था के जैद घर पर नहीं है और ईस ने अपने गुमान में सख्खी कसम जाई थी मगर हकीकत में जैद घर पर था तो येह कसम “लग्व” कहलाअेगी, येह मुआइ है और ईस पर कइफारा नहीं ﴿2﴾ गमूस येह है के किसी गुजरे हुअे या मौजूदा अम्र (या'नी मुआ-मले) पर दानिस्ता (या'नी ज्ञान भूज कर) जूटी कसम जाअे म-सलन किसी ने कसम जाई : “अद्लाह عَزَّوَجَلَّ की कसम ! जैद घर पर है,” और वोह ज्ञानता है के हकीकत में जैद घर पर नहीं है तो येह कसम “गमूस” कहलाअेगी और कसम जाने वाला सप्त गुनहगार हुवा, ईस्तिगफार व तौबा इर्ज है मगर कइफारा लाजिम नहीं ﴿3﴾ मुन्अकिदा येह है के आयन्दा के लिये कसम जाई म-सलन यूं कहा : “रब عَزَّوَجَلَّ की कसम ! मैं कल तुम्हारे घर जइर आउंगा.” मगर दूसरे दिन न आया तो कसम टूट गई, उसे कइफारा देना पड़ेगा और बा'ज सूरतों में गुनहगार भी होगा.

(فتاویٰ عالمگیری ج ۲ ص ۵۲)

भुलासा येह हुवा के कसम जाने वाला किसी गुजरी हुई या मौजूदा बात के बारे में कसम जाअेगा तो वोह या तो सख्खा होगा या

इरमाने मुस्तफ़ा ﷺ: जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्दे पाक न पढ़ा तब तक कि वो लुभ लुभ हो गया. (उंन)

झिर जूटा, अगर सख्खा लुगल तो कुलु लरज नहलं और अगर जूटा लुगल तो उस ने वुल कसम अपने ढलल के डुतलडलक अगर सख्खल ढलल थल तो अड डल लरज नहलं डल'नल गुनलड डल नहलं और ककुडरल डल नहलं लं अगर उसे डतल थल के डें जूटी कसम ढल रलड लूं तो गुनलडगलर लुगल डगर ककुडरल नहलं है, और अगर इस ने आडनल के वलडे कलसल कलड के करने डल न करने कल कसम ढलल तो अगर वुल कसम डूरल कर देतल है कुडलडल (डल'नल डूड डेडतर) वरनल ककुडरल देनल लुगल और डल'ज सूरतुं डें कसम तुडने कल वजल से गुनलडगलर डल लुगल. (इन सूरतुं कल तकुसलल आगे आ रलल है)

### जूटी कसम डलनल गुनलडे कडलरल है

रसूले डे डलसल, डलडल आडलनल के ललल ﷺ कल इरडलने आललशलन है : “अदललड एरुुजल के सलथ शलरु कुरनल, वलवलदैन कल नल इरडलनल करनल, कलसल जलन कु लतल करनल और जूटी कसम डलनल कडलरल गुनलड हैं.” (डूडरल ह ११० व १११)

### सड से डलले जूटी कसम शैतलन ने ढलल

लउरते सख्खलडनल आदड सकुडुदललड ﷺ को सजदल न करने कल वजल से शैतलन डरदूद हुवल थल वललडल कु वुल आड ﷺ को नुकसलन डलुंगलने कल तलक डें रलड. अदललड एरुुजल ने लउरलते सख्खलडनल आदड व लवुवल कु इरडलडल के जलनत डें रलड और जलडं दलल करे डे रुक तुक ढलओ अलडतुतल इस “दरडुत” के करुड न जलनल. शैतलन ने कलसल तरलड लउरलते सख्खलडनल आदड व

करमाने मुस्तक। على الله تعالى عليه و الله وسلم। जिसने मुझ पर दस भरतबा सुबह और दस भरतबा शाम दुइद पाक पढा।  
 उसे क्रियामत के दिन मेरी शक्राअत मिलेगी. (अनुवाद)

उव्वा के पास पहुँच कर कहा के मैं तुम्हें “श-जरे फुल्द” बता दूँ, उजरते सय्यिदुना आदम सफ़ियुल्लाह **عَلَى نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** ने मन्अ इरमाया तो शैतान ने कसम भाई के मैं तुम्हारा भैर ज्वाह (या’नी ललाई याहने वाला) हूँ. ईन्हें जयाल हुवा के अल्लाह पाक की जूटी कसम कौन भा सकता है ! येह सोच कर उजरते सय्यि-दतुना **وَرَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهَا** ने इस में से कुछ भाया फिर उजरते सय्यिदुना आदम सफ़ियुल्लाह **عَلَى نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام** को दिया उनहों ने ली भा लिया।  
 (مُلَخَّصٌ از تفسیر عبدالرزاق ج ۲ ص ۷۶) जैसा के पारह 8 सू-रतुल आ’राफ़ की आयत 20 और 21 में ईशाद होता है :

<p><b>فَوَسَّوَسَ لَهَا الشَّيْطَانُ لِيُبْدِيَ لَهَا مَا</b>  <b>وَرَى عَنْهَا مِنْ سَوَاتِحِهَا وَقَالَ مَا</b>  <b>نَهَكُمَا رَبُّكُمَا عَنْ هَذِهِ الشَّجَرَةِ إِلَّا</b>  <b>أَنْ تَكُونَا مَلَائِكَةً أَوْ تَكُونَا مِنَ الْخَالِدِينَ</b>  <b>وَقَاسَمَهُمَا إِنِّي لَكُمَا لَمِنَ النَّاصِحِينَ</b> ٥</p>	<p>तर-ज-मअे क-जुल ईमान : फिर शैतान ने उन के ज में भतरा डाला के उन पर भोल दे उन की शर्म की चीजें जो उन से छुपी थीं और बोला : तुम्हें तुम्हारे रब ने इस पेड से इसी लिये मन्अ इरमाया है के कहीं तुम दो फिरिश्ते हो जाओ या हमेशा जने वाले और उन से कसम भाई के मैं तुम दोनों का भैर ज्वाह हूँ.</p>
---	---

सदरुल अफ़ज़िल उजरते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुद्दीन मुरादआबादी **عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْهَادِي** तर्फ़सीरे भजाईनुल ईरफ़ान में लिखते हैं : मा’ना येह हैं के ईबलीसे मलूिन ने जूटी कसम भा कर उजरते (सय्यिदुना) आदम **(عَلَى نَبِيِّنا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام)** को धोका दिया

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुर्इ शरीफ़ न पढ़ा उस ने जफ़ा की. (مبارزين)

और पड़ला जूटी कसम खाने वाला इब्लीस ही है, उज़रते आदम की عَزَّ وَجَلَّ की गुमान ली न था के कोई अद्लाह की कसम खा कर जूट बोल सकता है, इस लिये आप ने उस की बात का अतिबार किया.

किसी का उक मारने के लिये जूटी कसम खाने वाला जहन्नमी है

रसूले करीम, रउकुर्हीम عَلَيْهِ أَفْضَلُ الصَّلَاةِ وَالتَّسْلِيمِ का इरमाने अजीम है : जो कसम खा कर किसी मुसलमान का उक मार ले अद्लाह उस के लिये जहन्नम वाजिब कर देता और उस पर जन्नत उराम इरमा देता है. अर्ज़ की गइ : يَا رَسُولَ اللَّهِ ! صَلَّيْ اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! अगरे वोह थोड़ी सी थीज ही हो ? इशाद इरमाया : “अगरे पीलू की शाप ही हो.” (مسلم من حديث ٢١٨ (١٣٧)) पीलू अक दरपत है जिस की शाप और जउ से मिस्वाक बनाते हैं.

जूटी कसम खाने वाले के उशर में हाथ पाँउ कटे हुअे होंगे

अक उज़रमी (या'नी मुहके यमन के शहर “उज़र मौत” के बाशिन्दे) और अक किन्दी (या'नी कबीलअे किन्दा से वाबस्ता अक शप्स) ने मदीने के ताजवर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की बारगाहे अन्वर में यमन की अक जमीन के मु-तअद्लिक अपना जगडा पेश किया, उज़रमी ने अर्ज़ की : “या रसूलद्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ! मेरी जमीन इस के बाप ने छीन ली थी, अब वोह इस के कब्जे में है.” तो नबिय्ये मुकर्म, नूरे मुजरसम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآलِهِ وَسَلَّمَ ने दरयाइत इरमाया : “क्या तुम्हारे पास कोई गवाही है ?” अर्ज़ की : “नहीं, लेकिन मैं इस से कसम लूंगा के अद्लाह की कसम खा कर कहे के वोह



करमाने मुस्तक़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज़ पर रोज़े जुमुआ दुरुद शरीफ़ पढ़ेगा मैं कियामत के दिन उस की शक़ाअत करूँगा. (क्र.अ. १)

नहीं जानता के वोह मेरी ज़मीन है जो इस के बाप ने गसब कर ली थी.” किन्दी कसम जाने के लिये तय्यार हो गया तो रसूले अकरम, शह-शाहे आदम व बनी आदम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईशाद ईरमाया : “जो (जूटी) कसम खा कर किसी का माल दबायेगा वोह बारगाहे ईलाही عَزَّ وَجَلَّ में इस डालत में पेश होगा के उस के हाथ पाई कटे हुअे डोंगे.” येह सुन कर किन्दी ने कड दिया के येह ज़मीन उसी (या'नी डज़रमी) की है.

(سُنَنِ ابُو دَاوُدَ ج ٣ ص ٢٩٨ ح ٤٤٤)

मुफ़स्सिरे शहीर डकीमुल उम्मत डज़रते मुफ़ती अहमद यार खान سُبْحَانَ اللهِ ! येह है असर उस ज़बाने ईज़ तरजुमान का के दो कलिमात में उस (किन्दी) के दिल का डाल बदल गया और सख़ी बात कड कर ज़मीन से ला दा'वा हो गया.

(मिरआतुल मनाज्जिह, जि. 5, स. 403)

### सात ज़मीनों का डार

रिशवतों के ज़रीअे दूसरों की जगहों पर कब्ज़ा कर के ईमारतें बनाने वालों, लोगों की तरफ़ से ठेके पर मिली लुई ज़र-ई ज़मीनें दबा लेने वाले किसानों, वडेरों और ख़ाईन ज़मीन डारों को धबरा कर ज़पट तौबा कर लेनी याहिये और जिन जिन के लुकूक दबाअे हैं वोह ईरन अदा कर देने याहिये के “मुस्लिम शरीफ़” में सरकारे नामदार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का ईरमाने ईब्रत निशान है : “जो शप्स किसी की ख़ालिशत त्तर ज़मीन नाडक तौर पर लेगा तो उसे कियामत के रोज़ सात ज़मीनों का तौक (या'नी डार) पडनाया जायेगा.”

(صَحِيحُ مُسْلِمٍ ص ٨٦٩ ح ١٦١٠)

करमाने मुस्तका : صلى الله تعالى عليه و اله وسلم : मुज पर दुइटे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तदारत है. (البريطاني)

## शारेअे आम पर बिला डाजते शर-ई रास्ता मत घेरिये

बा'ज लोग शारेअे आम पर बिला डाजत रास्ता घेर लेते हैं जिन में कई सूरतें लोगों के लिये सप्त तकलीफ का बाईस बनती हैं, म-सलन ﴿1﴾ बकर ईद के दिनों में कुरबानी के जानवर बेयने या किराअे पर रफने या जल्द करने के लिये बा'ज जगह बिला जइरत पूरी पूरी गलियां घेर लेते हैं ﴿2﴾ रास्ते में तकलीफ देह हद तक क्यरा या मल्बा डालते, ता'भीरात के लिये गैर जइरी तौर पर बजरी और सरियों का ढेर लगा देते हैं और यूंही ता'भीरात के बा'द महीनों तक बया हुवा सामान व मल्बा पडा रहता है ﴿3﴾ शादी व गमी की तकरीबों, नियाजों वगैरा के मौकओं पर गलियों में देगें पकाते हैं जिन से बा'ज अवकात जमीन पर गढे पड जाते हैं, फिर उन में क्रीयड और गन्दे पानी के जभीरे के जरीअे मख्जर पैदा होते और बीमारियां फैलती हैं ﴿4﴾ आम रास्तों में जुदाई करवा देते हैं मगर जइरत पूरी हो जाने के बा वुजूद त्तरवा कर हस्बे साबिक हमवार नहीं करते ﴿5﴾ रिहाईश या कारोबार के लिये ना जईज कब्जा जमा कर ईस तरह जगह घेर लेते हैं के लोगों का रास्ता तंग हो जाता है. इन सब के लिये लम्हअे इकिथ्या है.

दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-अतुल मदीना की मल्बूआ 853 सईहात पर मुश्तभिल किताब, "जहन्नम में ले जाने वाले आ'माल (जिल्द अक्वल)" सईहा 816 पर एमाम एब्ने हजर मक्की शाईई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْكُوفَى कबीरा गुनाह नम्बर 215 में ईस ई'ल (या'नी काम) को गुनाहे कबीरा करार देते हुअे इरमाते हैं : "शारेअे आम में गैर शर-ई तसरुई (मुदा-अलत)

ફરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : તુમ જહાં ભી હાં મુઝ પર દુરૂદ પઢો કે તુમહારા દુરૂદ મુઝ તક પહોંચતા હૈ. (ખૂરાન)

કરના યા'ની ઐસા તસરુફ (યા'ની દખ્લ દેના યા અમલ ઇંતિયાર) કરના જિસ સે ગુઝરને વાલોં કો સખ્ત નુક્સાન પહોંચે” ઇસ કા સબબ બયાન કરતે હુએ તહરીર કરતે હેં કે ઇસ મેં લોગોં કી ઇઝારસાની ઔર ઝુલ્મન ઉન કે હુકૂક કા દબાના પાયા જા રહા હૈ. ફરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : “જિસ ને એક બાલિશ્ત ઝમીન ઝુલ્મ કે તૌર પર લે લી કિયામત કે દિન સાતોં ઝમીનોં સે ઇતના હિસ્સા તૌક બના કર ઉસ કે ગલે મેં ડાલ દિયા જાએગા.”

(صحيح بخاری ج ۲ ص ۳۷۷ حدیث ۳۱۹۸)

## ઝૂટી કસમ ઘરોં કો વીરાન કર છોડતી હૈ

ઝૂટી કસમ કે નુક્સાનાત કા નકશા ખીંચતે હુએ મેરે આકા આ'લા હઝરત, ઇમામે અહલે સુન્નત, મૌલાના શાહ ઇમામ અહમદ રઝા ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن ફરમાતે હેં : ઝૂટી કસમ ઘરોં કો વીરાન કર છોડતી હૈ (ફતાવા ર-ઝવિયા મુબર્રજા, જિ. 6, સ. 602) એક ઔર મકામ પર લિખતે હેં : ઝૂટી કસમ ગુઝશ્તા બાત પર દાનિસ્તા (યા'ની જાન બૂઝ કર ખાને વાલે પર અગર્યે) ઇસ કા કોઈ કફ્ફારા નહીં, (મગર) ઇસ કી સજા યેહ હૈ કે જહન્નમ કે ખોલતે દરિયા મેં ગોતે દિયા જાએગા. (ફતાવા ર-ઝવિયા, જિ. 13, સ. 611) મીઠે મીઠે ઇસ્લામી ભાઈયો ! ઝરા ગૌર કીજિયે કે અલ્લાહ عَزَّوَجَلَّ જિસ ને હમેં પૈદા કિયા, પૂરી કાએનાત કો તખ્લીક કિયા (યા'ની બનાયા), જિસ પર હર હર બાત ઝાહિર હૈ, કોઈ ચીઝ ઉસ સે પોશીદા નહીં, હત્તા કે દિલોં કે ભેદ ભી વોહ ખૂબ જાનતા હૈ, જો રહમાન વ રહીમ ભી હૈ ઔર કહ્હાર વ જબ્બાર ભી હૈ, ઉસ રબ્બુલ અનામ કા નામ લે કર ઝૂટી કસમ ખાના કિતની બડી નાદાની કી બાત હૈ ઔર વોહ ભી દુન્યા કે કિસી આરિઝી (વક્તી) ફાએદે યા ચન્દ સિક્કોં કે લિયે !

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस भरतभा दुरेद पाक पढा अल्लाह उंस पर सो रलमतें नाजिल करमाता है. (जर्नल)

## यहूदियों ने शाने मुस्तफ़ा ए़ुपाने के लिये जूटी कसम षाएँ

यहूद के अहूबार (या'नी उ-लमा) और एन के रईसों (या'नी सरदारों) अबू राईअ व किनाना बिन अबिल हुकैक और का'ब बिन अशरई और हुययिबिन् अप्तब ने अल्लाह عَزَّوَجَلَّ का वोह अहूद ए़ुपाया जो सय्यिदे आलम, रसूले मोहतरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ पर एमान लाने के मु-तअद्विक एन से तौरैत शरीफ़ में लिया गया. वोह एंस तरह के उन्हों ने एंस को बदल दिया और एंस की जगह अपने हाथों से कुए का कुए लिख दिया और जूटी कसम षाएँ के येह अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की तरफ़ से है, येह सब कुए उन्हों ने अपनी जमाअत के ज़ाहिलों से रिश्वतें और मालो ज़र हासिल करने के लिये किया. उन के बारे में येह आयते मुबा-रका नाजिल हुई :

إِنَّ الَّذِينَ يَشْتَرُونَ بِعَهْدِ اللَّهِ وَأَيِّمَانِهِمْ  
شَسَاءً قَلِيلًا أُولَٰئِكَ لَا خَلَاقَ لَهُمْ فِي الْآخِرَةِ  
وَلَا يُكَلِّمُهُمُ اللَّهُ وَلَا يَنْظُرُ إِلَيْهِمْ يَوْمَ  
الْقِيَامَةِ وَلَا يَزَكِّيهِمْ وَلَهُمْ عَذَابٌ أَلِيمٌ ۝

(३५ अल عمران: ७७)

तर-ज-मअे क-जुल एमान : जो अल्लाह के अहूद और अपनी कसमों के बदले जलील दाम लेते हैं आभिरत में उन का कुए हिस्सा नहीं और अल्लाह न उन से बात करे, न उन की तरफ़ नज़र फ़रमाएे कियामत के दिन और न उन्हें पाक करे और उन के लिये दईनाक अज़ाब है.

(तफ़्सीर ख़ाज़न ज १ व २६०)

## नीली आंभों वाला मुनाफ़िक

अहूदुल्लाह बिन नप्तल (नामी अेक) मुनाफ़िक (था) जो रसूले करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की मजलिस में हाज़िर रहता और यहाँ

करमाने मुस्तफ़ा صلى الله تعالى عليه وآله وسلم : जिस के पास मेरा ठिक हो और वोड मुज पर दुइद शरीफ़ न पढे तो वोड लोगो में से कजूस तरीन शप्स है. (ज़िबेय)

की बात यहूद के पास पड़ोयाता (था), अक रोज़ हुज़ूरे अकदस वलैत सराअे अकदस में तशरीफ़ इरमा थे, हुज़ूरे वलैत सराअे अकदस ने इंस वक्त अक आदमी आअेगा जिस का हिल निहायत सप्त और शैतान की आंभों से देपता है, थोडी ही देर आ'द अब्दुल्लाह बिन नप्तल आया, उस की आंभें नीली थीं, हुज़ूरे सय्यिदे आलम वलैत सराअे अकदस ने उस से इरमाया : तू और तेरे साथी क्यूं हमें गालियां देते हैं ? वोड कसम आ गया के अैसा नहीं करता और अपने यारों को ले आया, उन्हों ने भी कसम आइ के हम ने आप को गाली नहीं दी, इस पर येह आयते करीमा नाजिल हुं :

أَلَمْ تَرَ إِلَى الَّذِينَ تَوَلَّوْا قَوْمًا غَضِبَ اللَّهُ عَلَيْهِمْ مِمَّا هُمْ مِنْكُمْ وَلَا مِنْهُمْ وَيَحْلِفُونَ عَلَى الْكُذِّبِ وَهُمْ يَعْلَمُونَ ﴿١٤﴾  
 तर-ज-मअे कजूल इमान : क्या तुम ने उन्हें न देआ जो अैसों के दोस्त हुअे जिन पर अब्दुल्लाह का गजब है, वोड न तुम में से न उन में से, वोड दानिस्ता जूटी कसम आते हैं.

(२८, مجادلة: ١٤)

(अजाइनुल इरफ़ान)

### जहन्नम में ले जाने का हुकम होगा

म-कूल है के कियामत के दिन अक शप्स को अब्दुल्लाह वलैत सराअे अकदस की आरगाह में आइ कया जाअेगा, अब्दुल्लाह वलैत सराअे अकदस उसे जहन्नम में ले जाने का हुकम इरमाअेगा. वोड अर्र करेगा : या अब्दुल्लाह वलैत सराअे अकदस ! मुजे किस लिये जहन्नम में लेजा जा रहा है ? इशाद हुगा : नमाजों को उन का वक्त गुजार कर पढने और मेरे नाम की जूटी कसमें आने की वजह से. (मक़ाशफ़े अल्लुब म, १८९)

करमाने मुस्तक। صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: उस शप्स की नाक पाक आलूद हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुर्रुदे पाक न पड़े. (म.)

## जूटी कसम खाने वाले ताजिर के लिये दईनाक अजाब है

हजरते सय्यिदुना अबू उर गिफारी رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ से भरवी है के अल्लाह عزَّ وَجَلَّ के महबूब, दानाअे गुयूब, मुनजूहनु अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईशाई इरमाया : “तीन शप्स अैसे हैं जिन से अल्लाह तआला न कलाम इरमाअेगा, न उन की तरफ नजरे करम इरमाअेगा और न ही उन्हें पाक करेगा बलके उन के लिये दईनाक अजाब है.” आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं के अल्लाह عزَّ وَجَلَّ के हबीब, हबीबे लबीब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने येह बात तीन बार ईशाई इरमाई तो मैं ने अर्ज की : वोह तो तबाहो बरबाद हो गअे, वोह कौन लोग हैं? ईशाई इरमाया : ﴿1﴾ तकब्बुर से अपना तहबन्द लटकाने वाला और ﴿2﴾ अेहसान जतलाने वाला और ﴿3﴾ जूटी कसम आ कर अपना माल बेयने वाला. (صحيح مسلم من 17 حديث 171) (107)

## जूटी कसम से ब-र-कत मित जाती है

ईस रिवायत से ખूसूसन वोह ताजिर व दुकान दार हजरत ईअ्रत पकडे जो जूटी कसमें आ कर अपना माल इरोप्त करते हैं, अश्या के उयूब (या'नी आमियां) धूपाने और नाकिस व घटिया माल पर जियादा नइअ कमाने की आतिर पै दर पै कसमें आअे यले जाते हैं और ईस में किसी किसम की आर (या'नी शर्म व जिजक) महसूस नही करते, इन के लिये लम्हअे इकिथ्या है के शईअे रोजे शुमार, दो आलम के मालिको मुप्तार बि ईज्ने परवर दगार صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने ईअ्रत निशान है : जूटी कसम से सौदा इरोप्त हो जाता है और ब-र-कत मित जाती

करमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरदे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआफ़ होंगे. (अमाल)

है. (कَنْزُ الْقِتَالِ ج 1 ص 297 حديث 4127) . “कसम सामान बिकवाने वाली है और ब-र-कत मिटाने वाली है.”

(صَحِيحُ بُخَارِي ج 2 ص 10 حديث 2087)

मुफ़रिसरे शहीर उकीमुल उम्मत हजरते मुफ़ती अहमद यार आन عَلَيْهِ وَحَمَمَةُ الْحَنَانِ ँस हदीसे पाक के तहत इरमाते हैं : ब-र-कत (मिट जाने) से मुराद आयन्दा कारोबार बन्द हो जाना हो या किये हुअे ब्योपार में घाटा (या'नी नुकसान) पड जाना या'नी अगर तुम ने किसी को जूटी कसम आ कर धोके से पराब माल दे दिया वोह अेक बार तो धोका आ जाअेगा मगर दोबारा न आअेगा न किसी को आने देगा, या जो रकम तुम ने उस से हासिल कर ली उस में ब-र-कत न होगी के हराम में बे ब-र-कती है. (मिरआतुल मनाज्जह, जि. 4, स. 344)

### बिन्तीर नुमा मुद़ा

दा'वते इस्लामी के इशाअती इदारे मक-त-बतुल मदीना का (32 सइहात) पर मुश्तमिल रिसाला “कफ़न योरों के इन्क़िशाफ़ात” में है : अेक बार पलीफ़ा अब्दुल मलिक के पास अेक शप्स घबराया हुवा हाज़िर हुवा और कहने लगा : आलीजाह ! मैं बेहद गुनहगार हूं और जानना चाहता हूं के आया मेरे लिये मुआफ़ी है या नहीं ? पलीफ़ा ने कहा : क्या तेरा गुनाह ज़मीन व आस्मान से भी बडा है ? उस ने कहा : बडा है. पलीफ़ा ने पूछा : क्या तेरा गुनाह लौह व कलम से भी बडा है ? जवाब दिया : बडा है. पूछा : क्या तेरा गुनाह अर्श व कुर्सी से भी बडा है ? जवाब दिया : बडा है. पलीफ़ा ने कहा : त्माई यकीनन तेरा गुनाह अब्दुल अज़्ज़ की रहमत से तो

કરમાને મુસ્તફા. صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : મુઝ પર દુરુદ શરીફ પઢો અલ્લાહ ઠુરુમ પર રહમત ભેજેગા. (અન-મદી)

બડા નહીં હો સકતા. યેહ સુન કર ઉસ કે સીને મેં થમા હુવા તૂફાન આંખોં કે ઝરીએ ઉમંડ આયા ઔર વોહ દહાડેં માર માર કર રોને લગા. ખલીફા ને કહા : ભઈ આખિર પતા ભી તો ચલે કે તુમહારા ગુનાહ ક્યા હે ! ઈસ પર ઉસ ને કહા : હુઝૂર ! મુઝે આપ કો બતાતે હુએ બેહદ નદામત હો રહી હે તાહમ અર્ઝ કિયે દેતા હૂં, શાયદ મેરી તૌબા કી કોઈ સૂરત નિકલ આએ. યેહ કહ કર ઉસ ને અપની દાસ્તાને વહ્શત નિશાન સુનાની શુરૂઅ કી. કહને લગા : આલીજાહ ! મેં એક કફન ચોર હૂં, આજ રાત મેં ને પાંચ કબ્રોં સે ઈબ્રત હાસિલ કી ઔર તૌબા પર આમાદા હુવા. ફિર ઉસ ને પાંચ કબ્રોં કે ઈબ્રત નાક અહવાલ સુનાએ, એક કબ્ર કા હાલ સુનાતે હુએ ઉસ ને કહા : કફન ચુરાને કી ગરઝ સે મેં ને જબ દૂસરી કબ્ર ખોદી તો એક દિલ હિલા દેને વાલા મન્ઝર મેરી આંખોં કે સામને થા ! ક્યા દેખતા હૂં કે મુદ્દે કા મુંહ ખિન્ઝીર જૈસા હો ચુકા હે ઔર વોહ તૌક વ ઝન્ઝર મેં જકડા હુવા હે. ગૈબ સે આવાઝ આઈ : યેહ ઝૂટી કસમેં ખાતા ઔર હરામ રોઝી કમાતા થા.

(ماخوذ از تنكرة الواعظين ص ۲۱۲)

### દિલ પર સિયાહ નુક્તા

ખા-તમુલ મુર-સલીન, રહમતુલ્લિલ આ-લમીન  
 صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ કા ફરમાને ઈબ્રત નિશાન હે : “જો શખ્સ કસમ ખાએ ઔર ઉસ મેં મચ્છર કે પર કે બરાબર ઝૂટ મિલા દે તો વોહ “કસમ” તા યૌમે કિયામત ઉસ કે દિલ પર (સિયાહ) નુક્તા બન જાએગી.”

(إتحاف السادة للزبيدي ج ۱ ص ۲۴۹)

કસમ સિર્ફ સચ્ચી હી ખાઈ જાએ

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો ! લરઝ જાઈયે ! કાંપ ઉઠિયે !!



करमाने मुस्तफ़ा ﷺ: ﷺ पर कसरत से दुरुद पाक पढो बशक तुम्हारा मुज पर दुरुद पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मज्किरत है. (मसूब)

यकीनन अद्लाह عَزَّوَجَلَّ का अजाब बरदाश्त नहीं हो सकेगा अगर माजी में जूटी कसमें पाई हैं तो उन से झौरन से पेशतर तौबा कर लीजिये और यह बात भूब जेहन नशीन इरमा लीजिये के अगर ब वक्ते ज़रत कसम आनी ही पडे तो सिई व सिई सय्यी कसम पाईये.

### मुसल्मान की कसम का यकीन कर लेना याहिये

अगर कोई मुसल्मान हमारे सामने किसी बात की कसम आये तो हुस्ने उन रफते हुअे हमें उस की बात का यकीन कर लेना याहिये, ईमाम श-रहुद्दीन न-ववी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْقَوِي इरमाते हैं के मुसल्मान भाई की कसम का अतिबार करना और उस को पूरा करना मुस्तअब है बशर्ते के उस में इतिने वगैरा का ईम्कान न हो.

(شرح مسلم للنووي ج ١٤ ص ٣٢)

### तूने योरी नहीं की

इज्जते सय्यिहुना अबू हुरैरा رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ इरमाते हैं: अद्लाह عَزَّوَجَلَّ के मअबूब, दानाअे गुयूब, मुनज़्जहुन अनिल उयूब ﷺ का इरमाने आलीशान है: (इज्जते) ईसा ईबने मरयम ने अेक शप्स को योरी करते देया तो उस से इरमाया: “तूने योरी की,” वोह बोला: “इरगिज नहीं उस की कसम जिस के सिवा कोई मा'बूद नहीं” तो (इज्जते) ईसा ने इरमाया: मैं अद्लाह पर ईमान लाया और मैं ने अपने को आप जुटलाया.

(صحيح مسلم من ١٢٨٨ حديث ٢٣٦٨)

### मोमिन अद्लाह की जूटी कसम कैसे आ सकता है!

अद्लाहु अकबर! देया आप ने! इज्जते सय्यिहुना ईसा रहुद्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام ने कसम आ लेने वाले के साथ कितना

करमाने मुस्तक़ी صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज़ पर अक़ दुइद शरीफ़ पढता है अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ उस के लिये अक़ कीरात अज लियता है और कीरात उहुद पछांड जितना है. (मौज़िज़)

अज़ीम बरताव किया. मुफ़रिसरे शहीर हकीमुल उम्मत हज़रते मुफ़ती अहमद यार खान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمَان उस कसम खाने वाले को छोड देने के मु-तअद्लिक हज़रते सय्यिदुना ईसा रूहुल्लाह عَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام على نَبِيِّنَا وَعَلَيْهِ الصَّلَاةُ وَالسَّلَام के मुकदस जज़्बात की अक़कासी करते हुअे तहरीर फ़रमाते हैं : या'नी ईस कसम की वजह से तुजे सय्या समज़ता हूँ के मोमिन बन्दा अल्लाह (عَزَّ وَجَلَّ) की "जूटी कसम" नहीं जा सकता, (क्यूँके) उस के दिल में अल्लाह के नाम की ता'ज़ीम होती है, अपने मु-तअद्लिक गलत इहमी का खयाल कर लेता हूँ के मेरी आंखों ने देखने में ग-लती की. (मिरआत, जि. 6, स. 623) अल्लाह عَزَّ وَجَلَّ की उन पर रहमत हो और उन के सदके हमारी बे हिसाब मग़्फ़िरत हो.

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاٰمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

## कुरआन उठाना कसम है या नहीं ?

कुरआने करीम की कसम खाना, कसम है, अलबत्ता सिर्फ़ कुरआने करीम उठा कर या भीय में रभ कर या उस पर हाथ रभ कर कोई बात करनी कसम नहीं. "इतावा र-जविय्या" जिल्द 13 सफ़हा 574 पर है : जूटी बात पर कुरआने मज्द की कसम उठाना सप्त अज़ीम गुनाहे कबीरा है और सय्यी बात पर कुरआने अज़ीम की कसम खाने में हरज नहीं और ज़रत हो तो उठा भी सकता है मगर येह कसम को बहुत सप्त करता है, बिला ज़रते ખાસ્सा न याहिये. नीज़ सफ़हा 575 पर है : हां मुसहफ़ (या'नी कुरआन) शरीफ़ हाथ में ले कर या उस पर हाथ रभ कर कोई बात कलनी अगर लफ़्ज़न हल्फ़ व कसम के साथ न

करमाने मुस्तफ़ा عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَسَلَّمَ: जिसने किताब में मुज़ पर दुरुद पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरश्ते उस के लिये ईस्तिफ़ार करते रहेंगे. (उं.५)

हो बढे शर-ई न होगी (या'नी कुरआने करीम को सिर्फ़ उठाने या उस पर हाथ रखने या उसे भीय में रखने को शरअन कसम करार न दिया जायेगा) म-सलन कहे के मैं कुरआने मज्हद पर हाथ रख कर कहता हूँ के औसा कइंगी और फिर न किया तो (यूँके कसम ही नहीं हुई थी) ईस लिये) कइँफ़ारा न आयेगा. وَاللَّهُ تَعَالَى أَعْلَمُ

### दो ईब्रत नाक इतावा

﴿1﴾ शराबी ने कुरआन उठा कर कसम खाई फिर तोड़ दी!!!

इतावा र-अविध्या जिल्द 13 सफ़हा 609 पर अेक शराबी के बारे में हुकूम दरयाफ़्त करते हुअे कुछ ईस तरह पूछा गया है के उस ने यार गवाहों के सामने कुरआने करीम उठा कर कसम खाई के आयन्दा शराब न पियूंगा मगर फिर पी ली. उस के तइसीली जवाब के आबिर में आ'ला हज़रत رَحْمَةُ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ इरमाते हैं: अगर उस ने कुरआन उठा कर कुरआन के नाम से कसम खाई या अद्लाह तआला के नाम से कसम खाई और ज़बान से अदा ली की हो फिर कसम तोड़ दी है तो उस पर कइँफ़ारा लाज़िम है. और अगर उस ने कुरआने मज्हद उठा कर कसम खाई है और बहुत सप्त मुआ-मला है के कुरआन उठा कर उस ने ईस की ખिलाफ़ वर्जी करते हुअे फिर से शराब नोशी की है जिस से कुरआने पाक की तौहीन तक मुआ-मला पड़ोया और (उस ने) कुरआन के अज़ीम हक की पामाली की है तो ईस सप्त कारवाई (या'नी जब के लइजे कसम न कहा हो सिर्फ़ कुरआने करीम उठाया हो ईस) पर कइँफ़ारा नहीं है बढे ईस के लिये उस पर लाज़िम है के इरन तौबा करे और उस बुरे इ'ल (या'नी शराब नोशी) को आयन्दा न करने का पुप्ता कसद (या'नी पककी निथ्यत) करे

करमाने मुस्तफ़ा : صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुर्रहे पाक पढा अद्वलाह उस पर दस रकमों में बेजता है. (1)

वरना फिर अद्वलाह तआला की तरफ़ से दईनाक अजाब और जहन्नम की आग का इन्तिज़ार करे. وَالْعِيَادُ لِلَّهِ تَعَالَى (या'नी और इस से अद्वलाह तआला की पनाह). और अगर ज़बान से कसम अदा नहीं की बल्के उसी कुरआन उठाने को कसम करार दिया तो इस कसम का वोही हुकम है के इस पर कफ़ारा नहीं बल्के अजाबे अलीम का इन्तिज़ार करे.

## ﴿2﴾ जूटी कसम खाने वाला जहन्नम के भौलते दरिया में गोते दिया जायेगा

सुवाल : जुदा की जूटी कसम खाने पर क्या कफ़ारा देना चाहिये ? अगर अेक ही वक्त में कई मर्तबा जूटी कसम जुदा की खाये तो अेक कफ़ारा दे या हर अेक कसम का अला-हदा अला-हदा ?

जवाब : जूटी कसम गुज़श्ता बात पर दानिस्ता (या'नी जान बूझ कर खाई तो), उस का कोई कफ़ारा नहीं, इस (जूटी कसम) की सज़ा येह है के जहन्नम के भौलते दरिया में गोते दिया जायेगा. और आयन्दा (की) किसी बात पर कसम खाई और वोह न हो सकी तो उस का कफ़ारा है, अेक कसम खाई हो तो अेक और दस (खाई हों) तो दस. وَاللَّهُ تَعَالَى أَعْلَمُ (या'नी और अद्वलाह तआला सब से ज़ियादा जानने वाला है)

## ब कसरत कसम खाने की मुमा-न-अत

रब्बे करीम عَزَّ وَجَلَّ का पारह 2 सू-रतुल ब-करह की आयत 224 में इरमाने अज़ीम है :

وَلَا تَجْعَلُوا لِلَّهِ عُرْضَةً لِأَيْبَانِكُمْ

तर-ज-मअे क-जुल ईमान : और अद्वलाह को अपनी कसमों का निशाना न बना लो.

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज़ पर दुइडे पाक पढना भूल गया वोह जन्नत का रास्ता भूल गया. (طبرانی)

सदरुल अफ़ाजिल उजरते अल्लामा मौलाना सय्यिद मुहम्मद नईमुदीन मुरादआबादी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْبَاهِي آیत के तहत लिखते हैं : बा'ज मुफ़स्सिरीन (رَحْمَةُ اللهِ الْبَاهِي) ने येह भी कहा है के इस आयत से ब कसरत कसम खाने की मुमा-न-अत साबित होती है.

(حاشية الصّاوي ج ١ ص ١٩٠)

उजरते सय्यिदुना ईब्राहीम न-ब-ई عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِي इरमाते हैं : जब हम छोटे छोटे थे तो हमारे बुजुर्ग कसम खाने और वा'दा करने पर हमारी पिटाई करते थे. (صحيح بخاری ج ٢ ص ٥١٦ حديث ٣٦٥١)

तू जूटी कसमों से मुज़ को सदा बया या रब !

न बात बात पे पाळिं कसम, जुदा या रब !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

“युप रहो सलामत रहोगे” के पन्टरह दुइडे की निस्बत से कसम के मु-तअख्लिक 15 म-दनी कूल

दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 1182 सङ्घात पर मुशतमिल किताब “बहारे शरीअत” जिल्द 2 सङ्घा 298 ता 311 और 319 से कसम और कङ्कारे से मु-तअख्लिक 15 म-दनी कूल पेश किये जाते हैं, (उजरतन कहीं कहीं तसर्दुङ् किया गया है)

बात बात पर कसम नहीं खानी याहिये

﴿1﴾ कसम खाना जाईज है मगर जहां तक हो कमी बेहतर है और बात बात पर कसम खानी न याहिये और बा'ज लोगों ने

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जिसके पास मेरा जिक्र हुआ और उसने मुझ पर दुरुइते पाक न पढा तलकीक़ा वोह बदे अफ्त हो गया. (अ. 1)

कसम को तक्या कलाम बना रखा है (या'नी दौराने गुफ्त-गू बार बार कसम खाने की आदत बना रपी है) के कस्द व बे कस्द (या'नी एरादतन और बिगैर एरादे के) ज़बान से (कसम) जारी होती है और इस का भी जयाल नहीं रफते के बात सख्यी है या जूटी ! येह सप्त मा'यूब (या'नी बहुत बुरी बात) है और गैरे फुदा की कसम मक़रुह है और येह शरअन कसम भी नहीं या'नी इस के तोउने से कफ़ारा लाज़िम नहीं.

### ग-लती से कसम खा ली तो ?

﴿2﴾ ग-लती से कसम खा बैठा म-सलन कहना याहता था के पानी लाओ या पानी पियूंगा और ज़बान से निकल गया के “फुदा की कसम पानी नहीं पियूंगा” तो येह भी कसम है अगर तोउगा कफ़ारा देना होगा. (बहारे शरीअत, ज़ि. 2, स. 300)

﴿3﴾ कसम तोउना एफ्तियार से हो या दूसरे के मजबूर करने से, कस्दन (या'नी जान बूझ कर) हो या तूलयूक से हर सूरत में कफ़ारा है बल्के अगर बेहोशी या जुनून में कसम तोउना हुवा जब भी कफ़ारा वाज़िब है जब के होश में कसम खाई हो और अगर बेहोशी या जुनून (या'नी पागल पन) में कसम खाई तो कसम नहीं के आकिल होना शर्त है और येह आकिल नहीं. (तय्बिन अलफ़ावक़ २, १२३)

### ऐसे अल्हाज़ जिन से कसम नहीं होती

﴿4﴾ येह अल्हाज़ कसम नहीं अगर्वे एन के बोलने से गुनहगार होगा जब के अपनी बात में जूटा है : अगर ऐसा कइ तो मुज़ पर अद्लाह (عَزَّ وَجَلَّ) का गज़ब हो. उस की ला'नत हो. उस का अज़ाब हो.

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज़ पर अक़ बार दुरुदे पाक पढा अद्लाह عُزْرُوَجَلَّ उस पर दस रउमतें बेजता है. (५)

पुढा का कइर टूटे. मुज़ पर आस्मान इट पडे. मुजे जमीन निगल जाओ. मुज़ पर पुढा की मार हो. पुढा की इटकार हो. रसूलुद्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की शफ़ाअत न मिले. मुजे पुढा का दीदार न नसीब हो. मरते वक्त कलिमा न नसीब हो. (فتاوى عالمگیری ج २ ص ०६)

### कसम की यार अक़साम

﴿5﴾ बा'ज कसमें ऐसी हैं के उन का पूरा करना जरूरी है, म-सलन किसी जैसे काम के करने की कसम भाई जिस का बिगैर कसम (बी) करना जरूरी था या गुनाह से बचने की कसम भाई (के गुनाह से बचने की कसम न बी भाओं तब बी गुनाह से बचना जरूरी ही है) तो इस सूरत में कसम सख्खी करना जरूर है. म-सलन (कहा) पुढा की कसम जोहर पढ़ूंगा या योरी या जिना न करूंगा. (कसम की दूसरी (किस्म) वोह के उस का तोडना जरूरी है म-सलन गुनाह करने या इराईज व वाजिबात (पूरे) न करने की कसम भाई, जैसे कसम भाई के नमाज न पढ़ूंगा या योरी करूंगा या मां बाप से कलाम (या'नी बातचीत) न करूंगा तो कसम तोड दे. तीसरी वोह के उस का तोडना मुस्तहब है म-सलन जैसे अन्न (या'नी मुआ-मले या काम) की कसम भाई के उस के गैर (या'नी इलावा) में बेहतरी है तो ऐसी कसम को तोड कर वोह करे जो बेहतर है. चौथी वोह के मुबाह की कसम भाई या'नी (जिस का) करना और न करना दोनों यक़सां है इस में कसम का बाकी रचना अइजल है. (المبسوط للسرخسي ج ६ ص १३३)

﴿6﴾ अद्लाह عُزْرُوَجَلَّ के जितने नाम हैं उन में से जिस नाम के साथ कसम भायेगा कसम हो जायेगी ज्वाह बोलयाल में उस नाम के साथ कसम भाते हों या नहीं. म-सलन अद्लाह (عُزْرُوَجَلَّ) की कसम,

﴿۷﴾ ईरमाने मुस्तफ़ी عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो शप्स मुज़ पर दुर्रहे पाक पढना बूल गया वोह जन्नत का रास्ता बूल गया. (بخاری)

पुढा की कसम, रइमान की कसम, रहीम की कसम, परवर दगार की कसम. यूही पुढा की जिस सिफ़त की कसम पाई जाती हो उस की कसम पाई, हो गई म-सलन पुढा की ईज़्जतो जलाल की कसम, उस की क़िब्रियाई (अ-ज़मत, बडाई) की कसम, उस की बुज़ुर्गी या बडाई की कसम, उस की अ-ज़मत की कसम, उस की कुदरत व कुव्वत की कसम, कुरआन की कसम, कलामुल्लाह की कसम. (فتاویٰ عالمگیری ج ۲ ص ۵۲)

﴿7﴾ ईन अद्वज़ से ली कसम हो जाती है : हद्व करता हूं. कसम पाता हूं. मैं शहादत देता हूं. पुढा को गवाह कर के कहता हूं. मुज़ पर कसम है. أَيْضاً اللَّهُ मैं येह काम न करूंगा.

**ऐसी कसम जिन के तोड़ने में कुड़ का अन्देशा है**

﴿8﴾ अगर येह काम करे या किया हो तो यहूदी है या नसरानी या काफ़िर या काफ़िरो का शरीक. मरते वक्त ईमान नसीब न हो. बे ईमान मरे. काफ़िर हो कर मरे. और येह अद्वज़ बहुत सप्त हैं के अगर जूटी कसम पाई या कसम तोड़ दी तो बा'ज़ सूरत में काफ़िर हो जायेगा. जो शप्स ईस किस्म की जूटी कसम पाये उस की निस्बत हदीस में इरमाया : “वोह वैसा ही है जैसा उस ने कहा.” या'नी यहूदी होने की कसम पाई तो यहूदी हो गया. यूंही अगर कहा : “पुढा जानता है के मैं ने ऐसा नहीं किया है.” और येह बात उस ने जूट कही है तो अकसर उ-लमा के नज़्दीक काफ़िर है.

(बछारे शरीअत, जि. 2, स. 301)

**किसी चीज़ को अपने ऊपर हुराम कर लेना**

﴿9﴾ जो शप्स किसी चीज़ को अपने ऊपर हुराम करे म-सलन कहे के कुलां चीज़ मुज़ पर हुराम है तो ईस कह देने से वोह शै हुराम



﴿فَرْمَانَهُ مُسْتَفْهِمٌ﴾ صَلَّى اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा जिंक हुआ और उस ने मुझ पर दुर्रदे पाक न पढा तलकीक वोह बढ अप्त हो गया. (قِنْ)

नहीं होगी के अद्लाह (عَزَّوَجَلَّ) ने जिस चीज को हलाल किया उसे कौन हराम कर सके ? मगर (जिस चीज को अपने उपर हराम किया) उस के भरतने (या'नी हस्ति'माल करने) से कफ़ारा लाजिम आयेगा या'नी येह भी कसम है. (تَبْيِيْنُ الْحَقَائِقِ ج ३ ص ६३१) तुज से बात करना हराम है येह (भी) यमीन (या'नी कसम) है. बात करेगा तो कफ़ारा लाजिम होगा. (فتاوى عالمگیری ج २ ص ०८)

### गैरे फुदा की कसम "कसम" नहीं

﴿10﴾ गैरे फुदा की कसम, "कसम" नहीं म-सलन तुम्हारी कसम. अपनी कसम. तुम्हारी जान की कसम. अपनी जान की कसम. तुम्हारे सर की कसम. अपने सर की कसम. आंभों की कसम. जवानी की कसम. मां बाप की कसम. औलाद की कसम. मजहब की कसम. दीन की कसम. इल्म की कसम. का'बे की कसम. अर्शे इलाही की कसम. रसूलुद्लाह की कसम. (ایضاً ص ०१)

﴿11﴾ फुदा व रसूल की कसम येह काम न करेगा येह कसम नहीं.

(ایضاً ص ०१, ०५)

﴿12﴾ अगर येह काम करे तो काफ़िरो से बढतर हो जाउं (कहा) तो (येह) कसम है और अगर कहा के येह काम करे (या'नी करे) तो काफ़िर को इस (या'नी मुज) पर शरफ़ हो (या'नी इज़ीलत हो) तो कसम नहीं. (ایضاً ص ०८)

### दूसरे के कसम दिलावे से कसम नहीं होती

﴿13﴾ दूसरे के कसम दिलावे से कसम नहीं होती म-सलन कहा : तुम्हें फुदा की कसम येह काम कर दो. तो इस कहने से (जिस से कहा) उस पर कसम न हुई या'नी न करने से कफ़ारा लाजिम नहीं.

करमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ : जिस ने मुज पर दस मरतबा सुब्ह और दस मरतबा शाम दुइटे पाक पढा  
उसे क्रियामत के दिन मेरी शफ़ाअत मिलेगी. (रुई)

एक शप्स किसी के पास गया उस ने उठना याहा उस ने कहा : फुदा  
की कसम न उठना और (जिस से कहा) वोह भडा हो गया तो उस  
कसम खाने वाले पर कफ़ारा नहीं. (ایضاً ص ۰۹-۱)

﴿14﴾ यहां एक काईदा याद रखना याहिये जिस का कसम में हर जगह  
लिहाज ठरूर है वोह येह के कसम के तमाम अह्काज से वोह मा'ना लिये  
जाअेंगे जिन में अहले उई इस्ति'माल करते हों म-सलन किसी ने कसम  
भाई के किसी मकान में नहीं जाअेगा और मस्जिद में या का'बअे  
मुअज़्जमा में गया तो कसम नहीं टूटी अगर्ये येह भी मकान हैं, यूं ही  
हम्माम में जाने से भी कसम नहीं टूटेगी. (فتاویٰ عالمگیری ج ۲ ص ۶۸)

### कसम में नियत और गरज का अ'तिभार नहीं

﴿15﴾ कसम में अह्काज का लिहाज होगा, इस का लिहाज  
न होगा के इस कसम से गरज क्या है या'नी उन लफ़्जों के बोलयाल  
में जो मा'ना हैं वोह मुराद लिये जाअेंगे कसम खाने वाले की नियत  
और मकसद का अ'तिभार न होगा म-सलन कसम भाई के “हुलां  
के लिये एक पैसे की कोई चीज नहीं खरीदूंगा” और एक रुपै की  
खरीदी तो कसम नहीं टूटी हालां के इस कलाम से मकसद येह हुवा  
करता है के न पैसे की खरीदूंगा न रुपै की मगर यूंके लफ़्ज से येह  
नहीं समझा जाता लिहाजा इस का अ'तिभार नहीं या कसम भाई के  
“दरवाजे से बाहर न जाउंगा” और दीवार कूद कर या सीढी लगा  
कर बाहर यला गया तो कसम नहीं टूटी अगर्ये इस से मुराद येह है  
के घर से बाहर न जाउंगा. (دُرْمُخْتَارُو رَدُّ الْمُحْتَارِ ج ۵ ص ۵۰۰)

इस जिम्न में हजरते सय्यिदुना इमामे आ'उम صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ وَاٰلِہٖمْ وَسَلَّمَ की  
एक खिकायत सुनिये और जूमिये युनान्थे

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस के पास मेरा ठिक हुआ और उस ने मुझ पर दुइद शरीफ़ न पढा उस ने जडा की. (عمر/۱۷۱)

## अन्डा न जाने की कसम पा ली

अेक शप्स ने कसम पाई के अन्डा न पाउंग्गा और इर येड कसम पाई के जो यीज इलां शप्स की जेब में है वोड जइर पाउंग्गा. अब देपा तो उस की जेब में अन्डा ही था. करोडों ह-नइय्यों के अजीम पेशवा हउरते सय्यिदुना एमामे आ'उम अबू हनीफ़ा से पूछा गया तो इरमाया : उस अन्डे को किसी मुर्गी के नीचे रभ दे और जब यूजा निकल आये तो उसे लून कर पा ले या शोरबे में पका कर शोरबे समेत पा ले. (इस सूरत में कसम पूरी हो जायेगी) (الخيرات الحسان ص ۱۸۰) **अद्लाह** **عَزَّ وَجَلَّ** की उन पर रहमत हो और उन के सडके हमारी बे हिसाब भगिइरत हो.

اٰمِيْنَ بِجَاهِ النَّبِيِّ الْاَمِيْنَ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ

## कसम के आ'उ अद्लाह

अगर वद्लाह बिद्लाह तद्लाह कहा तो तीन कसमें हुं. भभुदा. कसम से. भ हड्के शर-ई कहता हुं. अद्लाह को हाजिर नाजिर जान कर कहता हुं. अद्लाह को समीअ बसीर जान कर कहता हुं. BY GOD येड सब कसम के अद्लाह हैं. “अद्लाह को हाजिर नाजिर जान कर कहता हुं” इस तरह कहने से कसम तो हो जायेगी मगर अद्लाह **عَزَّ وَجَلَّ** को हाजिर नाजिर कहना मभूअ है.

## सरकारे मदीना صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ की कसम के अद्लाह

नबिय्ये करीम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ “وَمُقَلِّبِ الْقُلُوبِ” अकसर “وَالَّذِي نَفْسِي بِيَدِهِ” (या'नी कसम है हिलों के बदलने वाले की) या

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जो मुज पर रोजे जुमुआ दुइद शरीफ़ पड़ेगा में कियामत के दिन उस की शफ़ाअत कउंेगा. (कुरआन)

कसम उस की जिस के दस्ते कुदरत में मेरी जान है) के अल्फ़ाज के साथ कसम ईशाद इरमाया करते थे जैसा के उज़रते सय्यिदुना उमर (رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا) से रिवायत है के रसूले अकरम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ وَمُؤَلَّبِ الْقُلُوبِ : जि्यादा तर जो कसम ईशाद इरमाते थे वोह येह थी : यानी कसम है दिलों को बढलने वाले की. (बुखारी ज ६ व २७८ हदिथ १११७)

### हुज़ूर क़ी कसम पाना

दा'वते ईस्लामी के ईशाअती ईदारे मक-त-बतुल मदीना की मत्बूआ 561 सङ्घात पर मुशतमिल किताब, “मल्कुज़ाते आ'ला उज़रत” के सङ्घा 528 पर है के मेरे आका आ'ला उज़रत, ईमामे अहले सुन्नत, मौलाना शाह अहमद रज़ा पान عَلَيْهِ رَحْمَةُ الرَّحْمٰن سے अर्ज़ की गई : हुज़ूर (صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ) क़ी कसम प्ना कर पिलाइ करने से कइफ़ारा लाज़िम आयेगा या नहीं? तो इरमाया : नहीं.

(फ़तावु एल्मक़ीरु ज २ व ५१)

### बाप क़ी कसम पाना कैसा ?

अद्लाह उज़रते के मउबूब, दानाअे गुयूब, मुनज़ज़हुन अनिल उयूब صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने उज़रते सय्यिदुना उमर इाउके आ'ज़म को सुवारी पर यलते हुअे मुला-उज़ा इरमाया जब के आप رَضِيَ اللهُ تَعَالَى عَنْهُ अपने बाप क़ी कसम प्ना रहे थे. आप صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने ईशाद इरमाया : “अद्लाह उज़रते तुम को बाप क़ी कसम पाने से मन्अ करता है, जो शप्स कसम प्नाअे तो अद्लाह क़ी कसम प्नाअे या युप रहे.” (صَحِيحُ بُخَارِي ج ६ व २८१ हदिथ ११६६)

करमाने मुस्तक़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : मुज पर दुइटे पाक की कसरत करो बेशक येह तुम्हारे लिये तख़ारत है. (अबुसल)

मुइस्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत हजरते मुइती अहमद यार  
 ખાન عَلَيْهِ رَحْمَةُ الْحَنَّانِ ઇસ હદીસે પાક કે તહત ફરમાતે હેં : યા'ની ગૈરે  
 ખુદા કી કસમ ખાને સે મન્અ ફરમાયા ગયા. ચૂંકે અહલે અરબ ઉમૂમન  
 બાપ દાદોં કી કસમ ખાતે થે ઇસ લિયે ઇસી કા ઝિક હુવા, ગૈરે ખુદા  
 કી કસમ ખાના મકરૂહ હૈ, (મરફાતુલ મફતીહ જ ૧૯ વ ૦૧૧) અલ્લાહ  
 મુરાદ રબ તઆલા કે ઝાતી વ સિફાતી નામ હેં લિહાઝા કુરઆન  
 શરીફ કી કસમ ખાના જાઈઝ હૈ કે કુરઆન શરીફ કલામુલ્લાહ કા  
 નામ હૈ ઔર કલામુલ્લાહ સિ-ફતે ઇલાહી હૈ, કુરઆને મજીદ મેં  
 ઝમાના, ઇન્શર, ઝૈતૂન વગૈરા કી કસમેં ઇશાદ હુઈ વોહ શર-ઈ  
 કસમેં નહીં નીઝ યેહ અહકામ હમ પર જારી હેં ન કે રબ તઆલા  
 પર.

(મિરઆત જિ. 5, સ. 194, 195)

### કસમ મેં કહા તો કસમ હોગી યા નહીં ?

હુ-કહાએ કિરામ رَحْمَةُ اللهِ السَّلَام ફરમાતે હેં : કસમ મેં  
 کَلِمَةُ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ કહા તો ઉસ કા પૂરા કરના વાજિબ નહીં બશર્તે કે  
 کَلِمَةُ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ કા લફઝ ઇસ કલામ સે મુતસિલ (યા'ની મિલા હુવા)  
 હો ઔર અગર ફાસિલા હો ગયા મ-સલન કસમ ખા કર ચુપ હો ગયા યા  
 દરમિયાન મેં કુછ ઔર બાત કી ફિર کَلِمَةُ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ કહા તો કસમ બાતિલ  
 ન હુઈ. (દરમુખ્તારુરુઝાલમુખ્તાર જ ૦ વ ૦૬૪) હજરતે સય્યિદુના અબ્દુલ્લાહ બિન  
 ઉમર رضی اللهُ تَعَالَى عَنْهُمَا સે રિવાયત હૈ કે રસૂલે અકરમ, નૂરે મુજરસમ, શાહે  
 આદમ વ બની આદમ صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ને ફરમાયા : “જો શખ્સ  
 કસમ ખાએ ઔર ઉસ કે સાથ کَلِمَةُ اللهِ عَزَّ وَجَلَّ કહ લે તો હાનિસ (યા'ની  
 કસમ તોડને વાલા) ન હોગા.”

(તિરમ્ઝી જ ૩, વ ૧૮૩ હદિથ ૧૦૩૧)

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : تُمْ جَلَا لَمْ يَلَا مُوَجُّدَ لَمْ يَلَا تُمْ جَلَا لَمْ يَلَا مُوَجُّدَ لَمْ يَلَا تُمْ جَلَا لَمْ يَلَا مُوَجُّدَ لَمْ يَلَا  
 પહોંચતા હૈ. (طبرانی)

મુફરિસરે શહીર હકીમુલ ઉમ્મત હઝરતે મુફતી અહમદ યાર  
 ખાન عَلَيْهِ وَرَحْمَةُ الرَّحْمٰنُ ઈસ હદીસે પાક કે તહ્ત ફરમાતે હૈં : યા'ની કસમ  
 સે મુત્તસિલ (યા'ની ફૌરન બા'દ) કહ દે اِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ. ખુલાસા યેહ  
 હૈ કે અગર વા'દે યા કસમ સે મુત્તસિલ اِنَّ شَاءَ اللهُ عَزَّوَجَلَّ કહ દિયા જાએ  
 તો ઉસ કે ખિલાફ કરને પર ન ગુનાહ હૈ ન કફ્ફારા.

(મિરઆતુલ મનાજીહ, જિ. 5, સ. 201)

### બડી બડી મૂંઘેં વાલા બદ મઆશ

મીઠે મીઠે ઈસ્લામી ભાઈયો! હુસૂલે ઈલ્મે દીન કે લિયે દા'વતે  
 ઈસ્લામી કે સુન્નતોં ભરે ઈજતિમાઆત ભી અહમ ઝરીઆ હૈં, આપ  
 ભી અપને શહર મેં હોને વાલે હફતાવાર સુન્નતોં ભરે ઈજતિમાઆત  
 મેં શિર્કત કીજિયે, ઈન ઈજતિમાઆત કી બ-ર-કત સે કેસે કેસે બિગડે  
 હુએ લોગોં કી ઝિન્દગી મેં મ-દની ઈન્કિલાબ બરપા હો ગયા, ઈસ કી  
 એક ઝલક ઈસ મ-દની બહાર મેં મુલા-હઝા કીજિયે, યુનાન્યે એક  
 આલિમ સાહિબ જો કે દા'વતે ઈસ્લામી કે મુબલ્લિગ હૈં ઉન્હોં ને  
 બતાયા કે 1995 સિ.ઈ. મેં એક શપ્સ જિસ પર કમો બેશ 11 ઉકેતિયોં  
 કે કેસ થે જિન મેં એક કત્લ કા મુકદ્દમા ભી શામિલ હૈ. એક સાલ  
 જેલ કી સલાખોં કે પીછે ભી રહા થા. મહ-ક-મએ નહર મેં  
 મુલા-ઝમત ભી થી. તન-ખ્વાહ 3000 થી મગર વોહ ના જાઈઝ  
 ઝરાએઅ સે મ-સલન દરખ્ત ફરોખ્ત કર કે, ચોરી કા પાની વગૈરા દે  
 કર માહાના 10000 તક કર લેતા. ઉસ ને બડી બડી મૂંઘેં રખી થી,  
 દેખને વાલે કો ઉસ સે વહ્શત હોતી. એક રોઝ મેં ને ઈન્ફિરાદી  
 કોશિશ કરતે હુએ ઉસે દા'વતે ઈસ્લામી કે સુન્નતોં ભરે ઈજતિમાઆ  
 કી દા'વત પેશ કી મગર ઉસ ને મેરી દા'વત ટાલ દી, મેં ને હિમ્મત નહીં

इरमाने मुस्तका صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर दस मरतबा दूड़के पाक पढा अल्लाह عُزَّوَجَلَّ उस पर सो  
रहमते नाज़िल करमाता है. (अ. 1)

हारी वक्तन इ वक्तन द्वा'वत पेश करता रहा. आभिरे कार कभो  
बेश द्वा साल बा'द उस ने द्वा'वत कबूल कर ली और वोह  
“रिवोल्वर” के साथ इजतिमाअ में शरीक हो गया. इतिहास से  
उस दिन मेरा ही बयान था जो के जहन्नम के अजाब के मु-तअद्विक  
था. जहन्नम की तबाह कारियां सुन कर सप्त सर्दियों का मौसिम  
होने के बा वुजूह बद्द मआश पसीने से शराबोर हो गया. बा'द  
इजतिमाअ वोह रोता जाता और कडता जाता : हाअे ! मेरा क्या  
बनेगा ! मैं ने बहुत सारे गुनाह किये हैं. फिर वोह तीन दिन बुभार  
के आलम में रहा. उसे अपने गुनाहों का शिदत से अहसास हो चुका  
था, उस ने तौबा कर ली और नमाज़ें भी पढने लगा. दूसरी जुमा'रात  
उसे फिर इजतिमाअ में शिकत की सआदत मिली और जन्नत के  
मौजूअ पर बयान सुन कर उस को ढारस मिली. आहिस्ता आहिस्ता  
उस पर म-दनी रंग यढता यला गया. यहाँ तक के वोह द्वा'वते  
इस्लामी के म-दनी माहोल से वाबस्ता हो गया. उस ने घर से T.V.  
निकाल बाहर किया. (क्यूंके उस में सिर्फ गुनाहों तरे येनल्ल ही देणे  
जाते थे, “म-दनी येनल” शुरुअ न हुवा था) दाढी और सब्ज इमामा  
सजाने की सआदत भी हासिल कर ली. येह बयान देते वक्त वोह  
द्वा'वते इस्लामी के म-दनी कामों में मशगूल तन्जीमी तौर पर सूबाई  
सत्ह पर मजलिसे फुदामुल मसाजिद की जिम्मेदारी पर फाईज है.

अगर योर डाकू भी आ जायेंगे तो सुधर जायेंगे गर मिला म-दनी माहोल  
गुनहगारो आयो, सियह कारो आयो गुनाहों को देगा छुडा म-दनी माहोल

(वसाईले बज्शिश, स. 203)

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَى مُحَمَّدٍ

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : جلی اللہ تعالیٰ علیہ والہ وسلم : जिस के पास मेरा जिक्र हो और वोह मुज पर दुइद शरीफ न पढे तो वोह लोगों में से क-जस तरीन शप्स है. (त्रैतिस)

## કસમ કી હિફાઝત કીજિયે

દા'વતે ઈસ્લામી કે ઈશાઅતી ઈદારે મક-ત-બતુલ મદીના કે મત્બૂઆ તરજમે વાલે પાકીઝા કુરઆન, “કન્જુલ ઈમાન મઅ ખઝાઈનુલ ઈરફાન” સફહા 516 તા 517 પર પારહ 14 સૂ-રતુન્નહૂલ આયત નમ્બર 91 મેં ઈશાદિ રબ્બુલ ઈબાદ હૈ :

તર-જ-મએ કન્જુલ ઈમાન : और  
 وَأَوْفُوا بِعَهْدِ اللَّهِ إِذَا عَاهَدْتُمْ وَلَا تَفْضُوا  
 અલ્લાહ કા અહ્દ પૂરા કરો જબ કૌલ  
 إِلَّا يَبَانَ بَعْدَ تَوْكِيدهَا وَقَدْ جَعَلْتُمُ اللَّهَ  
 બાંધો और કસમેં મઝબૂત કર કે ન તોડો  
 عَلَيْكُمْ كَفِيلًا ۗ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا تَفْعَلُونَ ﴿٩١﴾  
 और तुम अल्लाह को अपने ठीपर  
 जामिन कर चुके हो, बेशक अल्लाह  
 तुम्हारे काम जानता है.

और पारह 7 सू-रतुल माઈदહ કી આયત 89 મેં અલ્લાહ عَزَّ وَجَلَّ ફરમાતા હૈ :

وَاحْفَظُوا أَيْمَانَكُمْ  
 તર-જ-મએ કન્જુલ ઈમાન : और  
 अपनी कसमों की हिफाजत करो.

સદરુલ અફાઝિલ હઝરતે અલ્લામા મૌલાના સચ્ચિદ મુહમ્મદ નઈમુદીન મુરાદઆબાદી عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللَّهِ الْهَادِي તફસીરે “ખઝાઈનુલ ઈરફાન” મેં ઈસ આયત કે તહ્ત લિખતે હેં : યા'ની ઈન્હેં પૂરા કરો અગર ઈસ મેં શરઅન કોઈ હરજ ન હો और યેહ ભી હિફાઝત હૈ કે કસમ ખાને કી આદત તર્ક કી જાએ.

## બેહતર કામ કરને કે લિયે કસમ તોડના

હઝરતે સચ્ચિદના અદી બિન હાતિમ رَضِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَنْهُ ફરમાતે હેં કે મેરે પાસ એક શપ્સ 100 દિરહમ માંગને આયા, મેં ને નારાઝ હોતે હુએ કહા : તુમ મુઝ સે સિર્ફ 100 દિરહમ માંગ રહે હો હાલાં કે



इरमाने मुस्लिम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : उस शप्स की नाक पाक आवूह हो जिस के पास मेरा जिक्र हो और वो मुझे मुज पर दूरे पाक न पड़े. (म)

में हातिम (ताई) का बेटा हूँ, अल्लाह की कसम ! मैं तुम्हें नहीं दूंगा. फिर मैं ने कहा : अगर मैं ने रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का येह ईशदि पाक न सुना होता के “जिस शप्स ने किसी काम की कसम पाई फिर उस ने इस से बेहतर चीज का पयाव किया तो वोह उस बेहतर काम को करे.” युनान्चे मैं तुम्हें 400 डिरहम दूंगा. (صحيح مسلم ص १९९ حديث १७०१)

## बेहतर काम के लिये कसम तोडना ज़ाह है मगर कइफ़ारा देना होगा

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! बेहतर काम के लिये कसम तोडने की इजाजत ज़रूर है मगर तोडने के बाद कइफ़ारा देना होता है जैसा के हज़रते सय्यिदुना अबुल अह्वस औफ़ इब्ने मालिक जैसा के हज़रते सय्यिदुना अबुल अह्वस औफ़ इब्ने मालिक अपने वालिद से रिवायत इरमाते हैं : मैं ने अर्ज़ की : या रसूलुल्लाह صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ इरमाईये के मैं अपने ययाजाद भाई के पास कुछ मांगने जाता हूँ तो वोह मुझे नहीं देता, न सिलअे रेहमी करता है, फिर इसे (जब) मेरी ज़रूरत पडती है तो मेरे पास आता है, मुज से कुछ मांगता है. मैं कसम पा युका हूँ के न इसे कुछ दूंगा न सिलअे रेहमी करूंगा. तो मुझे हुज़ूर सरापा नूर صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ ने हुकूम दिया के जो काम अख़्त है वोह करूँ और अपनी कसम का कइफ़ारा दे दूँ. (سُنَنِ نَسَائِي ص ११९ حديث ३७९३)

## मुल्मन ईजा देने की कसम पा ली तो क्या करे ?

अगर किसी को मुल्मन ईजा देने की कसम पाई तो इस कसम का पूरा करना गुनाह है. इस कसम के बहले कइफ़ारा देना होगा. युनान्चे बुपारी शरीफ़ में है, रहमते आलम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ का इरमाने मुअज़्जम है : अगर कोई शप्स अपने अह्ल के मु-तअद्लिक उस को अजिथत और ज़रूर (या'नी नुक्सान)

इरमाने मुस्तक (صلى الله تعالى عليه وآله وسلم) जिस ने मुज पर रोजे जुमुआ दो सो बार दुरहे पाक पढा उस के दो सो साल के गुनाह मुआक छोणे. (अहमद)

पड़ोयाने के लिये कसम खाये पस बभुदा उस को जरूर देना और कसम को पूरा करना ईन्द्दलाह (या'नी अल्लाह के नज़्दीक) ज़ियादा गुनाह है इस से के वोह उस कसम के बदले कफ़ारा दे जो अल्लाह तआला ने उस पर मुकरर इरमाया है. (११२० حديث २८१ ص ६ ج २، इतावा र-जविय्या, जि. 13, स. 549)

**मुइस्सिरे शहीर हकीमुल उम्मत** हज़रते मुइती अहमद यार आन **عليه رحمة الخان** इस हदीसे पाक के तहत इरमाते हैं : या'नी जो शप्स अपने घर वालों में से किसी का हक़ फ़ौत (या'नी हक़ त-लफ़ी) करने पर कसम खा ले म-सलन येह के मैं अपनी मां की खिदमत न कड़ंगा या मां आप से बातचीत न कड़ंगा, ऐसी कसमों का पूरा करना गुनाह है. इस पर वाजिब है के ऐसी कसमें तोड़े और घर वालों के हुकूक अदा करे, ખયાલ રહે યહાં યેહ મતલબ નહીં કે યેહ કસમ પૂરી ન કરના ભી ગુનાહ મગર પૂરી કરના જિયાદા ગુનાહ હૈ બલકે મતલબ યેહ હૈ કે ઐસી કસમ પૂરી કરના બહુત બડા ગુનાહ હૈ, પૂરી ન કરના સવાબ, કે અગર્યે રબ તઆલા કે નામ કી બે અ-દબી કસમ તોડને મેં છોતી હૈ ઈસી લિયે ઈસ પર કફારા વાજિબ હોતા હૈ મગર યહાં કસમ ન તોડના જિયાદા ગુનાહ કા મૂજિબ હૈ. (મિરઆતુલ મનાજીહ, જિ. 5, સ. 198 મુલખ્ખસન)

### તલાક કી કસમ ખાના, ખિલાના કેસા ?

કિસી સે તલાક કી કસમ લેના મુનાફિક કા તરીકા હે મ-સલન કિસી સે કહના : “કસમ ખાઓ કે ફુલાં કામ મેં ને કિયા હો તો મેરી બીવી કો તલાક.” યુનાન્યે મેરે આકા, આ'લા હઝરત, ઈમામે અહલે સુન્નત, મૌલાના શાહ ઈમામ અહમદ રઝા ખાન **عليه رحمة الرحمن** “इतावा र-जविय्या” જિલ્દ 13 સફહા 198 પર હદીસે પાક નક્લ કરતે હૈં : મોમિન તલાક કી કસમ નહીં ખાતા ઓર તલાક કી કસમ નહીં લેતા મગર મુનાફિક. (ابن عساکر ج ٥٧ ص ٣٩٣)

ફરમાને મુસ્તફા ﷺ : عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاللَّهُ وَسَلَّمَ : મુઝ પર દુરુદ શરીફ પઢો અલ્લાહ ગુજલ તુમ પર રહમત ભેજેગા. (અબુ દાઉદ)

### કસમ કા કફફારા

દા'વતે ઈસ્લામી કે ઈશાઅતી ઈદારે મક-ત-બતુલ મદીના કે મત્બૂઆ તરજમે વાલે પાકીઝા કુરઆન, “કન્ઝુલ ઈમાન મઅ ખઝાઈનુલ ઈરફાન” સફહા 235 પર પારહ 7 સૂ-રતુલ માઈદહ કી આયત નમ્બર 89 મેં ઈશાદિ રબ્બુલ ઈબાદ હૈ :

لَا يُؤَاخِذُكُمُ اللَّهُ بِاللَّغْوِ فِى أَيْسَانِكُمْ وَلَكِنْ  
يُؤَاخِذُكُمْ بِمَا عَقَّدْتُمُ الْأَيْسَانَ ۚ فَكَفَّارَتُهُ  
إِطْعَامُ عَشْرَةِ مَسْكِينٍ مِنْ أَوْسَطِ مَا تُطْعَمُونَ  
أَهْلِيكُمْ أَوْ سَوَاتِلَهُمْ أَوْ حُرِّيرَ رقَبَةٍ ۚ فَمَنْ لَمْ  
يَجِدْ فَصِيَامُ شَلْثَةِ أَيَّامٍ ۚ ذَلِكَ كَفَّارَةُ  
أَيْسَانِكُمْ إِذَا حَلَقْتُمْ ۚ وَأَحْفَظُوا أَيْسَانَكُمْ ۚ  
كَذَلِكَ يبينُ اللَّهُ لَكُمْ آيَاتِهِ لَعَلَّكُمْ تَشْكُرُونَ ﴿٨٩﴾

(પાર 7, વાલ્દા આયત 89)

તર-જ-મએ કન્ઝુલ ઈમાન : અલ્લાહ તુમ્હેં નહીં પકડતા તુમ્હારી ગલત ફહમી કી કસમોં પર હાં ઉન કસમોં પર ગિરિફત ફરમાતા હૈ જિન્હેં તુમ ને મઝબૂત ક્રિયા, તો ઐસી કસમ કા બદલા દસ મિસ્કીનોં કો ખાના દેના અપને ઘર વાલોં કો જો ખિલાતે હો ઉસ કે ઔસત મેં સે યા ઈન્હેં કપડે દેના યા એક બરદહ (ગુલામ) આઝાદ કરના, તો જો ઈન મેં સે કુછ ન પાએ તો તીન દિન કે રોઝે યેહ બદલા હૈ તુમ્હારી કસમોં કા, જબ કસમ ખાઓ ઔર અપની કસમોં કી હિફાઝત કરો. ઈસી તરહ અલ્લાહ તુમ સે અપની આયતેં બયાન ફરમાતા હૈ કે કહીં તુમ એહસાન માનો.

“યા રહ્મતલિલ આ-લમીન” કે તેરહ હુરુફ કી નિસ્બત સે કસમ કે કફફારે કે 13 મ-દની ફૂલ કફફારે કે લિયે કસમ કી શરાઈત

﴿1﴾ કસમ કે લિયે ચન્દ શર્તે હેં, કે અગર વોહ ન હોં તો

फ़रमाने मुस्तफ़ा صَلَّی اللّٰهُ تَعَالٰی عَلَیْهِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّمَ : मुज़ पर कसरत से दुर्रदे पाक पढो बेशक तुम्हारा मुज़ पर दुर्रदे पाक पढना तुम्हारे गुनाहों के लिये मक्किरत है. (रुम् १)

कफ़ारा नहीं. कसम खाने वाला (1) मुसल्मान (2) आकिल (3) बालिग़ हो. काफ़िर की कसम, कसम नहीं या'नी अगर ज़माने कुफ़ में कसम खाई फिर मुसल्मान हुवा तो उस कसम के तोड़ने पर कफ़ारा वाजिब न होगा. और اَللّٰهُمَّ اِنِّیْ اَسْأَلُکَ (या'नी अल्लाह की पनाह) कसम खाने के बाद मुरतद हो गया तो कसम बातिल हो गई या'नी अगर फिर मुसल्मान हुवा और कसम तोड़ दी तो कफ़ारा नहीं और (4) कसम में येह भी शर्त है के वोह यीज़ जिस की कसम खाई अक्लन मुम्किन हो या'नी हो सकती हो, अगर्चे मुहाले आदी हो और (5) येह भी शर्त है के कसम और जिस यीज़ की कसम खाई दोनों को अक साथ कहा हो दरमियान में फ़ासिला होगा तो कसम न होगी म-सलन किसी ने इस से कहलाया के कह, ખુદા की कसम ! इस ने कहा : ખુદા की कसम ! उस ने कहा : कह, ફુલાं काम કરુંગા, इस ने कहा तो येह कसम न हुई.

(फ़तावु एल्मकिरी ज २ व ०१)

### कसम का कफ़ारा

﴿2﴾ गुलाम आजाद करना या दस मिसकीनों को खाना खिलाना या उन को कपडे पहनाना है या'नी येह इप्तिहार है के इन तीन बातों में से जो चाहे करे. (تَبْيِيْنُ الْحَقَائِقِ ج ३ व ६३). (याद रहे ! जहां कफ़ारा है भी तो वोह सिर्फ़ आयन्दा के लिये खाई गई कसम पर है, गुज़श्ता या मौजूदा के मु-तअद्लिक़ खाई हुई कसम पर कफ़ारा नहीं. म-सलन कहा : “ખુદા की कसम ! मैं ने कल अक भी गिलास ठन्डा पानी नहीं पिया.” अगर पिया था और याद होने के बाद वुजूद जूटी कसम खाई थी तो गुनहगार हुवा तौबा करे, कफ़ारा नहीं)

### कफ़ारा अदा करने का तरीका

﴿3﴾ (दस) मसाकीन को दोनों वक्त पेट भर कर खिलाना

इरमाने मुस्तफ़ा عَلَيَّ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ: जो मुज पर एक दुबद शरीफ़ पढता है अल्लाह उंस के लिये एक कीरात अज लिखता है और कीरात उछुद पछाड जितना है. (मुरज़)

डोगा और जिन मसाकीन को सुब्द के वक्त षिलाया उन्हीं को शाम के वक्त भी षिलाये, दूसरे दस मसाकीन को षिलाने से (कफ़ारा) अदा न डोगा. और येड डो सकता है के दसों को अेक डी दिन (दोनों वक्त) षिला दे या डर रोज अेक अेक को (दो वक्त) या अेक डी को दस दिन तक दोनों वक्त षिलाये. और मसाकीन जिन को षिलाया उन में कोई बय्या न डो और षिलाने में ँबाडत (जाने की ँज्जत दे देना) व तम्लीक (या'नी मालिक बना देना के याडे जाये याडे ले जाये) दोनों सूरतें डो सकती हैं और येड भी डो सकता है के षिलाने के ँवज (या'नी बजाये) डर मिस्कीन को निस्फ़ (या'नी आधा) साअ गेडूं या अेक साअ जव (अेक साअ 4 डिलो में से 160 ग्राम कम और निस्फ़ या'नी आधा साअ 2 डिलो में से 80 ग्राम कम का डोता है) या ँन की कीमत का मालिक कर दे या दस रोज तक अेक डी मिस्कीन को डर रोज ब क-दरे स-द-कअे इंत्र दे दिया करे या बा'ज को षिलाये और बा'ज को दे दे. गरज येड के उंस की (या'नी कफ़ारा अदा करने की) तमाम सूरतें वहीं से (या'नी मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ बडारे शरीअत जिल्द 2 सफ़डा 205 ता 217 पर दिये डुअे (जिडार के) कफ़ारे के बयान से) मा'लूम करें इर्क ँतना है के वहां (या'नी जिडार के कफ़ारे में) साठ मिस्कीन थे (जब के) यहां (या'नी कसम के कफ़ारे में) दस हैं.

(دُرْمُخْتَارُ رُوِّ الْمُخْتَارِ ٥ ص ٥٢٣)

### कफ़ारे के लिये नियत शर्त है

﴿4﴾ कफ़ारा अदा डोने के लिये नियत शर्त है बिगैर नियत अदा न डोगा डं अगर वोड शै जो मिस्कीन को दी और देते वक्त नियत न की मगर वोड यीज अत्नी मिस्कीन के पास मौजूद है और

﴿5﴾ कसमाने मुस्तफ़ा: عَلَى اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَاللَّهُ وَسَلَّمَ: जिस ने किताब में मुज पर दुरुददे पाक लिखा तो जब तक मेरा नाम उस में रहेगा फिरश्ते उस के लिये ईस्तिस्कार करते रहेंगे. (उं. 1)

अब निश्चय कर ली तो अदा हो गया जैसा के जकात में फ़कीर को देने के बा'द निश्चय करने में येही शर्त है के हुनूज (या'नी अभी तक) वोह यीज फ़कीर के पास बाकी हो तो निश्चय काम करेगी वरना नहीं.

(حاشية الطحطاوى على الدر المختار ج 2 ص 198)

﴿5﴾ 2-मजान में अगर कफ़ारे का पाना पिलाना याहता है तो शाम और स-हरी दोनों वक्त पिलाओ या अक मिसकीन को 20 दिन शाम का पाना पिलाओ.

(الجوهرة النيرة ص 203)

### कफ़ारे में तीन रोज़ों की ईजाजत की सूत्र

﴿6﴾ अगर गुलाम आजाद करने या 10 मिसकीन को पाना या कपडे देने पर कादिर न हो तो पै दर पै (या'नी लगातार) तीन रोज़े रभे.

(أيضاً)

### कफ़ारा अदा करते वक्त की हैसियत का अ'तिबार है के रोज़े रभे या.....

﴿7﴾ आजिज (या'नी मजबूर) होना उस वक्त का मो'तबर है जब कफ़ारा अदा करना याहता है म-सलन जिस वक्त कसम तोडी थी उस वक्त मालदार था मगर कफ़ारा अदा करने के वक्त (माली अ'तिबार से) मोहताज है तो रोज़े से कफ़ारा अदा कर सकता है और अगर (कसम) तोडने के वक्त मुफ़लिस (व मिसकीन) था और अब (कफ़ारा अदा करने के वक्त) मालदार है तो रोज़े से (कफ़ारा) नहीं अदा कर सकता.

(الجوهرة النيرة ص 203 وغيرها)

### कफ़ारे के तीनों रोज़े पै दर पै होना जरूरी हैं

﴿8﴾ अक साथ (अगर) तीन रोज़े न रभे या'नी दरमियान में फ़ासिला कर दिया तो कफ़ारा अदा न हुवा अगर्ये किसी मजबूरी

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : जिस ने मुझ पर एक बार दुरुदे पाक पढा अदलाह उस पर दस रउमतें भेजता है. (स्)

के सभल नागा हुवा हो, यहाँ तक के औरत को अगर हैज आ गया तो पहले के रोजे का अतिबार न होगी या'नी अब पाक होने के बाद (नअे सिरे से) लगातार तीन रोजे रभे. (दुर्मुख्तार ज ०५१)

### रोजों से कफ़ारे की एक जरूरी शर्त

﴿9﴾ रोजों से कफ़ारा अदा होने के लिये यह भी शर्त है के अतम तक (या'नी तीनों रोजे मुकम्मल होने तक) माल पर कुदरत न हो म-सलन अगर दो रोजे रभने के बाद इतना माल मिल गया के कफ़ारा अदा कर सकता है तो अब रोजों से (कफ़ारा अदा) नहीं हो सकता बल्के अगर तीसरा रोजा भी रभ लिया है और गु़रुभे आइताब से पहले माल पर कादिर हो गया तो रोजे नाकाफी हैं अगर ये माल पर कादिर होना यूं हुवा के उस के मूरिस (या'नी वारिस बनाने वाले) का इन्तिकाल हो गया और उस को तर्का (या'नी विसा) इतना मिलेगा जे कफ़ारे के लिये काफ़ी है. (दुर्मुख्तार ज ०५१)

### कफ़ारे के रोजे की निश्चय के दो अडकाम

﴿10﴾ इन रोजों में रात से निश्चय शर्त है और यह भी जरूर है के कफ़ारे की निश्चय से हों मुत्लक रोजे की निश्चय काफ़ी नहीं. (मिबसुत ज १११)

### कसम तोडने से पहले कफ़ारा दिया तो अदा न हुवा

﴿11﴾ कसम तोडने से पहले कफ़ारा नहीं, और (अगर दे भी) दिया तो अदा न हुवा या'नी अगर कफ़ारा देने के बाद कसम तोडी तो अब फिर दे के जे पहले दिया है वोह कफ़ारा नहीं, मगर इकीर से दिये हुअे को वापस नहीं ले सकता. (फतावै عالمग़िरी ज २ व १६)

﴿۱۲﴾ کفرمانے مستحق ہے: عَلِيُّ اللَّهِ تَعَالَى عَلَيْهِ وَالهِ وَسَلَّمَ: जो शपथ मुझ पर दुरुद्धे पाक पढना (बूल गया वोह जन्त का रास्ता (बूल गया). (ط. ۲)

## कड़इारे का मुस्तहिक कौन ?

﴿12﴾ कड़इारा उन्हीं मसाकीन को दे सकता है जिन को जकात दे सकता है या'नी अपने बाप, मां, औलाद वगैरहुम को जिन को जकात नहीं दे सकता कड़इारा भी नहीं दे सकता. (दरमुख्तार ज ००, ०११)

﴿13﴾ कड़इारअे कसम की कीमत मस्जिद में सई (या'नी अर्थ) नहीं कर सकता न मुद्दे के कड़न में लगा सकता है या'नी जहां जहां जकात नहीं अर्थ कर सकता वहां कड़इारे की कीमत नहीं दी जा सकती. (एलमगीरी ज २, १२) (कसम और कड़इारे के बारे में तइसीली मा'लूमात के लिये द्वा'वते इस्लामी के इशाअती इंदारे मक-त-अतुल मदीना की मत्बूआ 1182 सइहात पर मुश्तमिल किताब अडारे शरीअत जिल्द 2 सइहा 298 ता 311 का मुता-लआ जरूरी है)

## दीनी या समाज् इंदारे को कड़इारे की रकम देने का अहम मस्अला

अगर किसी दीनी या मुसल्मानों के समाज् इंदारे को कड़इारे की रकम देना चाहे तो दे सकता है मगर अताना डोगा के येह कड़इारे की रकम है ताके वोह उस रकम को अलग रख कर उसे अयान कर्दा तरीके पर काम में लाअें या'नी अेक डी मिसकीन को दस दिन तक दोनों वक्त अिलाना या दस मसाकीन को दोनों वक्त अिलाना वगैरा. अगर दीनी इंदारा दीनी कामों में सई करना चाहे तो डीला करने का तरीका येह है, म-सलन अेक डी मिसकीन को रोजाना अेक स-द-कअे इत्र या दस मिसकीनों को अेक डी दिन में अेक अेक स-द-कअे इत्र का मालिक अनाया जाअे और वोह अपनी तरफ से दीनी कामों के लिये पेश करें.



﴿كُفْرًا مِّنْهُ مُرْتَدِّفًا ۖ وَصَلَّىٰ اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ﴾: जिस के पास मेरा जिक्र हुआ और उस ने मुझ पर दुश्मते पाक न पढा तलकीक  
 वोह बढ भुप्त हो गया. (उरुः)

तू जूटी कसम से बया या एलाही !

मुझे सय का आदी बना या एलाही !

صَلُّوا عَلَى الْحَبِيبِ! صَلَّى اللَّهُ تَعَالَىٰ عَلَىٰ مُحَمَّدٍ

वाह क्या बात है म-दनी तरबियती कोर्स की !

भीठे भीठे ईस्लामी भाईयो ! जूटी कसमों से तौबा का जज्बा पाने, बात बात पर कसम पाने की फसलत मिताने, ज़रूरी दीनी मा'लूमात पाने और सुन्नतों पर अमल की आदत बनाने के लिये “दा'वते ईस्लामी” के म-दनी माहोल में 63 दिन का म-दनी तरबियती कोर्स करवाया जाता है, जिस से बन पड़े वोह येह मुझीद तरीन म-दनी तरबियती कोर्स ज़रूर करे, आप की तरगीब व तहरीस के लिये अक म-दनी बहार पेश की जाती है, युनान्चे अक ईस्लामी भाई के बयान का ખुलासा है : हमारे अलाके का अक नौ जवान जो के वालिदैन का ईकलौता (या'नी अक ही) भेटा था, गलत सोलभत के सबब यरस का आदी बन गया, घर से बाहर रहना उस का मा'मूल था, वालिद साहिब अक्सर उस को कब्रिस्तान जा कर यरसियों के दरमियान से उठा कर घर लाते. तमाम घर वाले उस के सबब परेशान थे. अक दिन अक ईस्लामी भाई ने उस नौ जवान पर ईन्डिरादी कोशिश करते हुअे उसे म-दनी तरबियती कोर्स करने की तरगीब दी, ખुश किस्मती से उस ने हामी त्र ली और तब्लीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते ईस्लामी के आलमी म-दनी मर्कज़ इैजाने मदीना में आ गया. घर में ખुशी की लहर दौड गई ! सभी घर वाले दुआ कर रहे थे के येह नेक बन जाअे

ફરમાને મુસ્તફા صَلَّی اللہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم : جيس نے मुज पर अक बार दुरदे पाक पढा अल्लाह अउर उस पर दस रउदमतें बेजता है. (स्)

મગર અબ ત્ની ડરે હુએ થે કે કહીં યેહ વાપસ ન આ જાએ. الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ  
ચન્દ દિનોં બા'દ કુછ ઈસ તરહ ફોન આયા કે “તરબિયતી કોર્સ  
ઔર ફેઝાને મદીના મેં બહુત મઝા આ રહા હૈ, ફેઝાને મદીના મેં  
ઐસા લગતા હૈ કે મદીનએ મુનવ્વરહ رَاذَهَا اللّٰهُ شَرَفًا وَتَعْظِيمًا સે બરાહે  
રાસ્ત ફેઝ આ રહા હૈ, મેં ને અપને તમામ ગુનાહોં સે તૌબા કર લી  
હૈ, અબ મેં બા જમાઅત નમાઝેં અદા કર રહા હૂં, સુન્નતેં સીખ રહા  
હૂં ઔર મુઝે બહુત સુકૂન મિલ રહા હૈ.” الْحَمْدُ لِلَّهِ عَزَّوَجَلَّ મ-દની  
તરબિયતી કોર્સ સે વાપસી પર વોહ વાકેઈ બિલ્કુલ બદલ ચુકા થા.  
ઉસ કી હૈરત અંગેઝ તબ્દીલી સે સબ ઘર વાલે બલ્કે સારા મહલ્લા  
હૈરાન થા. યેહરે પર નૂર બરસાતી દાઢી ઔર સર પર સબ્ઝ ઈમામા  
શરીફ કા તાજ જગમગા રહા થા. ઉસ ને આતે હી ઘર વાલોં પર ત્ની  
ઈન્ફિરાદી કોશિશ શુરૂઅ કર દી જિસ કી બ-ર-કત સે વાલિદ સાહિબ  
ને યેહરે પર દાઢી ઔર સર પર ઈમામા શરીફ કા તાજ સજા લિયા  
ઔર પાબન્દી સે હફ્તાવાર સુન્નતોં ભરે ઈજતિમાઅ મેં શિર્કત ફરમાને  
લગે. વાલિદએ મોહતરમા “દર્સે નિઝામી” ઔર બહન “શરીઅત  
કોર્સ” કરને કે લિયે કમર બસ્તા હો ગઈ. ઉસ નૌ જવાન કે વાલિદ  
સાહિબ ને મુબલ્લિગે દા'વતે ઈસ્લામી કો કુછ ઈસ તરહ બતાયા કે મેં  
દા'વતે ઈસ્લામી વાલોં કે લિયે બ-ર-કત કી દુઆ કરતા હૂં, ખુસૂસન  
ઉન કે લિયે જિન્હોં ને મેરે બેટે પર “ઈન્ફિરાદી કોશિશ” કી ઔર 63  
દિન કે મ-દની તરબિયતી કોર્સ મેં હાથોં હાથ લે ગએ ક્યૂંકે હમ ઈસ  
કી આદતોં સે બહુત પરેશાન થે, ઈસ કી વાલિદા તો ઈતની બેઝાર  
હો ચુકી થી કે એક દિન જઝબાત સે મગ્લૂબ હો કર કીડે મકોડે મારને  
કી દવાઈ ઉઠા લાઈ કે યા તો મેં બા કર મર જાઊંગી યા ઈસ કો ખિલા  
કર માર દૂંગી. અબ ઈસ કી વાલિદા રો રો કર દુઆએં દેતી હેં કે

فرمانے مستحقاً صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : ۞ شمسِ موز پر دھڑکے پاک پڑنا بھول گیا وہ لول جننت کا راستا بھول گیا. (طرائق)

اٹلااڈ عَزَّ وَجَلَّ ءا'وتے ءسلائی والوں کو سلاامت ربه کے ءن کی کوششوں سے مبرا بگذا لوبا ناک بن گیا.

اگر سوننتوں سبب سے کا لے جڑوا تم آا آا آا آا سببا م-دنی ماڈول  
تو ءاڈی اڈا لے ءماما سبب لے نللی لے یہ ل ڈرگول بورا م-دنی ماڈول

(وساءلے افسش، س. 604)

صَلُّوا عَلَيَّ الْحَبِيبِ! صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيَّ مُحَمَّدٍ

یہ ل رساالا پڈ کر ءسره کو ءے ءیجیے

شاءی گمی کی تکررلاال، ءجالیماآال، آا'راس اور جوبسے مبلال ءرورے میں م-دنی ماڈول کے شاآرے آءا رساءل اور م-دنی کولوں پر مشامل پمفلٹ تکررلاال کر کے سواا کمالیے، گالوں کو ا نلآلے سواا لوڈکے میں ءنے کے لیلے اآنی ءکالوں پر مبل رساءل رلنے کا ما'بھول بناءیے، اآار ءرولوں یا اآوں کے آریآے اآنے ماڈلے کے ڈر ڈر میں ماآانا کم آا کم آک آءء سوننالوں مبرا رساالا یا م-دنی کولوں کا پمفلٹ پآوںآا کر نکی کی ءا'وال کی ڈھے مآالیے اور بھول سواا کمالیے.

لاللے گمے مءیلا و  
اکیا و مگفرل و  
بے لساا جننال  
فرءس میں آاا  
کا پآوس



شا'بانول موزم 1433 س.ل.

### ماخذ و مراجع

مطبوعه	کتاب	مطبوعه	کتاب
دارالفکر بیروت	ابن عساکر	مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی	قرآن پاک
دارالکتب العلمیہ بیروت	مبسوط	مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی	ترجمہ کنز الایمان
دارالکتب العلمیہ بیروت	تیسین الحقائق	مصر	تفسیر خازن
کوئٹہ	حاشیہ الطحاوی علی الدر المختار	دارالفکر بیروت	حاشیہ الصاوی علی الجلالین
دارالعرف بیروت	در مختار	مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی	تفسیر خزائن العرفان
باب المدینہ کراچی	جوہر نیرہ	دارالکتب العلمیہ بیروت	بخاری
دارالفکر بیروت	فتاویٰ عالمگیری	دارابن حزم بیروت	مسلم
رضا فاؤنڈیشن مرکز الادیاء لاہور	فتاویٰ رضویہ	داراحیاء التراث العربی بیروت	ابوداؤد
دارالکتب العلمیہ بیروت	مکاشفۃ القلوب	دارالفکر بیروت	ترمذی
مکتبہ المدینہ باب المدینہ	بہار شریعت	دارالکتب العلمیہ بیروت	نسائی
دارالکتب العلمیہ بیروت	اتحاف السادہ	دارالکتب العلمیہ بیروت	شرح صحیح مسلم
پشاور	تذکرۃ الواعظین	ضیاء القرآن پبلیشز مرکز الادیاء لاہور	مرآة المناجیح
مکتبہ المدینہ باب المدینہ کراچی	وسائل بخشش	دارالکتب العلمیہ بیروت	مجموع الجوامع

ઉત્વાન	સંક્રા	ઉત્વાન	સંક્રા
ફિરિશ્તે આમીન કહતે હૈં	1	ગૈરે ખુદા કી કસમ “કસમ” નહીં	23
કસમ કી તા’રીફ	2	દૂસરે કે કસમ દિવાને સે કસમ નહીં હોતી	23
કસમ કી તીન અકસામ	3	કસમ મેં નિયત ઓર ગરઝ કા એ’તિબાર નહીં	24
ઝૂટી કસમ ખાના ગુનાહે કબીરા હે	4	અન્ડા ન ખાને કી કસમ ખા લી	25
સબ સે પહલે ઝૂટી કસમ શૈતાન ને ખાઈ	4	કસમ કે બા’ઝ અલ્લાહ	25
કિસી કા હક મારને કે લિયે ઝૂટી કસમ ખાને વાલા જહન્નમી હે	6	સરકારે મદીના <small>حَسْبِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ</small> કી કસમ કે અલ્લાહ	25
ઝૂટી કસમ ખાને વાલે કે હરર મેં હાથ પાઉ કટે હુએ હોંગે	6	હુઝુર <small>حَسْبِيَ اللَّهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ</small> કી કસમ ખાના	26
સાતઝમીનોં કા હાર	7	બાપ કી કસમ ખાના કેસા ?	26
શારેએ આમ પર રાસ્તા મત ઘરિયે	8	કસમ મેં <small>حَسْبِيَ اللَّهُ تَعَالَى</small> કહા તો કસમ હોગી યા નહીં ?	27
ઝૂટી કસમ ઘરોં કો વીરાન કર છોડતી હે	9	બડી બડી મુંછોં વાલા બદ મઆશ	28
શાને મુસ્તફા હુખાને કે લિયે ઝૂટી કસમ ખાઈ	10	કસમ કી હિકાજત કીજિયે	30
નીલી આંખોં વાલા મુનાફિક	10	બેહતર કામ કરને કે લિયે કસમ તોડના	30
જહન્નમ મેં લે જાને કા હુકમ હોગા	11	બેહતર કામ કે લિયે કસમ તોડના જાઈઝ હૈ મગર	
ઝૂટી કસમ ખાને વાલે તાજિર કે લિયે દર્દનાક અઝાબ હે	12	કફ્ફારા દેના હોગા	31
ઝૂટી કસમ સે બ-ર-કત મિટ જાતી હે	12	ઝુલ્મન ઈઝા દેને કી કસમ ખા લી તો ક્યા કરે ?	31
ખિન્ઝીર નુમા મુદ્દા	13	તલાક કી કસમ ખાના, ખિલાના કેસા ?	32
દિલ પર સિયાહ નુક્તા	14	કસમ કા કફ્ફારા	33
કસમ સિર્ફ સચ્ચી હી ખાઈ જાએ	14	કસમ કે કફ્ફારે કે 13 મ-દની ફૂલ	33
મુસલ્માન કી કસમ કા યકીન કર લેના ચાહિયે	15	કફ્ફારે કે લિયે કસમ કી શરાઈત	33
તૂને ચોરી નહીં કી	15	કસમ કા કફ્ફારા	34
મોમિન અલ્લાહ કી ઝૂટી કસમ કેસે ખા સકતા હે !	15	કફ્ફારા અદા કરને કા તરીકા	34
કુરઆન ઉઠાના કસમ હૈ યા નહીં ?	16	કફ્ફારે કે લિયે નિયત શર્ત હે	35
દો ઈબ્રત નાક ફતાવા	17	કફ્ફારે મેં તીન રોઝોં કી ઈજાઝત કી સૂરત	36
શરાબી ને કુરઆન ઉઠા કર કસમ ખાઈ ફિર તોડ દી	17	કફ્ફારા અદા કરતે વક્ત કી હેસ્તિયત કા એ’તિબાર હે	36
ઝૂટી કસમ ખાને વાલા જહન્નમ કે ખોલતે દરિયા મેં ગોત્રે દિયા જાએગા	18	કફ્ફારે કે તીનોં રોઝે પૈ દર પૈ હોના ઝરૂરી હૈં	36
બ કસરત કસમ ખાને કી મુમા-ન-અત	18	રોઝોં સે કફ્ફારે કી એક ઝરૂરી શર્ત	37
કસમ કે મુ-ત-અલ્લિક 15 મ-દની ફૂલ	19	કફ્ફારે કે રોઝે કી નિયત કે દો અહકામ	37
બાત બાત પર કસમ નહીં ખાની ચાહિયે	19	કસમ તોડને સે પહલે કફ્ફારા દિયા તો અદા ન હુવા	37
ગ-વતી સે કસમ ખા લી તો ?	20	કફ્ફારે કા મુસ્તાહિક કૌન ?	38
એસે અલ્લાહ જિન સે કસમ નહીં હોતી	20	દીની યા સમાજ ઈદારે કો કફ્ફારે કી રકમ દેને કા અહમ મસ્બલા	38
કસમ કી ચાર અકસામ	21	વાહ ક્યા બાત હૈ મ-દની તરબિયતી કોર્સ કી !	39
એસી કસમ જિન કે તોડને મેં કુફ કા અન્ટેશા હે	22	મઆબિઝ વ મરાજેઅ	41
કિસી ચીઝ કો અપને ઊપર હરામ કર લેના	22		

हर सुबह ये ह नियत कर लीजिये  
 आज का दिन आंख, कान,  
 जभान और हर उरूव को गुनाहों  
 और कुमूलियात से बचाते हुअे,  
 नेकियों में गुमारांगेगा. إِنْ شَاءَ اللَّهُ عَزَّوَجَلَّ

### कियामत के रोज उसरत

इरमाने मुस्तफ़ा صَلَّى اللهُ تَعَالَى عَلَيْهِ وَآلِهِ وَسَلَّمَ : सब से कियादा  
 उसरत कियामत के दिन उस को होगी जिसे दुन्या में एल्म हासिल  
 करने का मौकअ मिला मगर उस ने हासिल न किया और उस  
 शप्स को होगी जिस ने एल्म हासिल किया और दूसरों ने तो  
 उस से सुन कर नफ़अ उठाया लेकिन एस ने न उठाया (या'नी उस  
 एल्म पर अमल न किया). (तारिख دمشق لابن عساکر ج १ ص ३८ ३९ دارالفکر بیروت)

### किताब के भरीदार मु-तवज्जेह हों

किताब की तबाअत में नुमायां भराबी हो या सफ़हात कम हों या  
 बाएन्डिंग में आगे पीछे हो गअे हों तो मक-त-बतुल मदीना से  
 रुजूअ इरमाएये.

## सुन्नत की बहारें

तब्दीगे कुरआनो सुन्नत की आलमगीर गैर सियासी तहरीक दा'वते ईस्लामी के मडके मडके म-दनी माहोल में अ कसरत सुन्नतों सीपी और सिबाई जती छै, हर जुमा'रात ईशा की नमाज के आ'द आप के शहर में खोने वाले दा'वते ईस्लामी के हकतावार सुन्नतों भरे ईजतिमाअ में रिआअे ईलाही के लिये अग्यी अग्यी निप्यतों के साथ सारी रात गुजारने की म-दनी ईज्तिअ छै. आशिकाने रसूल के म-दनी काफिलों में अ निप्यते सवाअ सुन्नतों की तरबिप्यत के लिये सकर और रोजाना किंके मदीना के जरीअे म-दनी ईन्आमात का रिसाला पुर कर के हर म-दनी माह के ईब्तिदाई दस दिन के अन्दर अन्दर अपने यहाँ के जिम्मेदार को जम्अ करवाने का मा'भूल बना लीजिये, **إِن شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى** ईस की अ-र-कत से पाअन्दे सुन्नत बनने, गुनाहों से नकरत करने और ईमान की खिकाजत के लिये कुहने का जेह्द बनयेगा.

हर ईस्लामी भाई अपना येस जेह्द बनाओ के "मुजे अपनी और सारी दुन्या के लोगों की ईस्लाह की कोशिश करनी छै. **إِن شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى**" अपनी ईस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी ईन्आमात" पर अमल और सारी दुन्या के लोगों की ईस्लाह की कोशिश के लिये "म-दनी काफिलों" में सकर करना छै. **إِن شَاءَ اللَّهُ تَعَالَى**



### मड-त-अतुल मदीना की शाखें

सूरत : वलियाभाई मस्जिद, प्वाज्र दाना दरगाह के पास, 9898615071

जमनगर : पांच हाटडी, 9327977293

भोडासा : सुका अजर, 9725824820

गांधीधाम : सपना नगर, मदीना मस्जिद के पास, 8141474279

धोलका : ताजदारे मदीना मस्जिद के सामने, टावर बाजार, 9374915797

**मड-त-अतुल मदीना**

दा'वते ईस्लामी

**مكتبة الدینة**

सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने, तील दरवाजा, अहमदशाबाद-1 गुजरात, इन्डिया  
Mo.091 93271 68200 E-mail : maktabaahmedabad@gmail.com www.dawateislami.net